संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-20 अंक- 259
पृष्ठ 8
शनिवार
08 जून 2024
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- गर्भवती महिलाओं को नही...

विचार- लौट रहा है गठबन्धन सरकारों का दौर

खेल- टी२० वर्ल्ड कपः नींद से जागा आईसीसी..

विपक्षी गठबंधन पीएम मोदी का तीखा हमला, बोले-

हम हारे कहां से भाई, ये एनडीए की महाविजय

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का नेता चुने जाने के बाद कार्यवाहक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को संसदीय दल को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने एनडीए सरकार को सबसे सफल गठबंधन बताया। इस दौरान उन्होंने विपक्ष और उनके इंडी गठबंधन को जमकर घेरा। उन्होंने ईवीएम को लेकर भी विपक्षी गठबंधन को जमकर खरी–खोटी सुनाई। पीएम मोदी ने कहा, ''जब चार जून के नतीजे आए तो मैं काम में व्यस्त था। बाद में फोन आना शुरू हुए। मैंने कहा कि ये आंकड़े तो ठीक हैं, ये बताओ कि ईवीएम जिंदा है या मर गया? क्योंकि ये लोग तय करके बैठे थे कि भारत के लोकतंत्र और लोकतंत्र की प्रक्रिया से लोगों का विश्वास उठा दिया जाए। ये लगातार ईवीएम को गाली देते रहे। ये ईवीएम की अर्थी निकालने की तैयारी में थे। शाम आते–आते उनकी जुबान में ताले लग गए और ईवीएम ने उन्हें चुप करा दिया। यह ताकत लोकतंत्र और चुनाव आयोग की है। आशा करता हूं कि पांच साल ईवीएम नहीं सुनाई देगा, लेकिन

2029 में हम जाएं तो शायद ये फिर ईवीएम कहने लगेंगे। चुनाव में हर तीसरे दिन सुप्रीम कोर्ट के दरवाजे खटखटाए गए ताकि चुनाव आयोग के काम में रुकावट आए। कैसे रुकावट डालें, इसका प्रयास करते रहे। चुनाव जब चरम पर थे, तब चुनाव आयोग की ताकत का बड़ा हिस्सा अदालतों में जा रहा था। कितनी निराशा था उन लोगों में। देश उन्हें कभी माफ नहीं करेगा।'' उन्होंने कहा, ''इंडी गठबंधन वाले जब ईवीएम का जिक्र करते थे तो मैं इसे चुनाव के रूप में नहीं देखता। मैं मानता हूं कि ये तीसरी शताब्दी के लोग हैं। ये तकनीक को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। जब हम यूपीआई लेकर आए, तब ये मानने को तैयार नहीं हुए। आधार देश की पहचान है, कई देश ऐसी व्यवस्था चाहते हैं। इन्होंने इसका भी विरोध किया। इंडी गठबंधन तकनीक का विरोधी है। विश्व में भारत के लोकतंत्र की ताकत को कम आंकने की प्रयास होते हैं। मैं ढिंढोरा पीटता हूं कि हमारे यहां लोकतंत्र है, ये विदेश में जाकर कहते हैं कि यहां लोकतंत्र नहीं है, मोदी आकर बैठ गया है। ये लोग भारत को बदनाम करने का षड्यंत्र करते हैं। अब लगता है कि दुनिया भी हमारे लोकतंत्र की ओर आकर्षित होगी।'' पीएम मोदी ने कहा, ''जब 1 जून को मतदान प्रक्रिया पूरी हुई और 4 जून को नतीजे आए। उसके बीच योजनाबद्ध तरीके से देश को हिंसा की आग में झोंकने का काम हुआ। आप पहले भारत की लोकतंत्र व्यवस्था का अनादर करते हैं, फिर आग लगाने की बात करते हैं। उन्होंने लगातार देश को बांटने का प्रयास किया। ये नतीजे एनडीए की महाविजय है। आपने देखा कि दो दिन सब कैसे चला। जैसे हम हार चुके हैं, हम तो गए। उन्हें असल में अपने कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाना था तो काल्पनिक बातें कीं। गठबंधन के इतिहास में आंकड़ों के हिसाब से देखें तो यह गठबंधन की सबसे मजबूत सरकार है। देशवासी जानते हैं कि न हम हारे थे, न हारे हैं, लेकिन 4 जून के बाद हमारा जो व्यवहार रहा है, वह हमारी पहचान बताता है कि हम विजय को पचाना जानते हैं। हम जानते हैं कि विजय की गोद में उन्माद पैदा नहीं होता और न ही पराजित लोगों का उपहास करने के हमारे संस्कार हैं।'' उन्होंने कहा, ''किसी भी बच्चे से पूछो कि लोकसभा चुनाव से पहले किसकी सरकार थी, वह कहेगा एनडीए। नतीजों के बाद किसकी सरकार बनी, वह कहेगा एनडीए। तो हारे कहां से भाई? पहले भी एनडीए, आज भी एनडीए, कल भी एनडीए। 10 साल बाद भी कांग्रेस सौ के आंकड़े को पार नहीं कर पाई। अगर मैं 2014, 2019, 2024 के तीन चुनाव को जोड़ू तो उन्हें जितनी कुल सीटें इन चुनावों में मिली हैं, उससे ज्यादा सीटें हमें इस चुनाव में मिली हैं। इंडी गठबंधन वालों को अंदाज नहीं है। वे पहले तो डूब रहे थे, अब वे तेज गति से गर्त में जाने वाले हैं।'' उन्होंने कहा, ''इंडी गठबंधन वाले देश के सामान्य नागरिकों की समझ को नहीं समझना चाहते। भारत के सामान्य व्यक्ति की भी एक समझ है। जो जमीन से जुड़ा रहता है, वह समझ को पहचानता है। ये लोग वहां नहीं हैं। इन लोगों का 4 जून के बाद जो व्यवहार रहा है, मैं आशा करता था कि वे लोकतंत्र का सम्मान करेंगे, लेकिन शायद उनमें यह संस्कार आएं, इसके लिए हमें और इंतजार करना पड़ेगा।

गठबंधन नहीं चला पाएंगे मोदी : जयराम रमेश

● लोकतंत्र में नहीं, डेमो–कुर्सी में विश्वास करती हैं भाजपा

नई दिल्ली, एजेंसी। भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के नवनिर्वाचित सांसदों ने शुक्रवार को संसद के सेंट्रल हॉल में एक हाई–प्रोफाइल बैठक के दौरान सर्वसम्मति से नरेंद्र मोदी को अपने संसदीय दल का नेता बनाने का प्रस्ताव पारित किया और प्रधानमंत्री के रूप में उनका समर्थन भी किया। हालांकि, इसको लेकर राजनीति भी शुरू हो गई है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने इसपर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि 2024 के चुनाव नरेंद्र मोदी के लिए श्प्रचंड हारश थी। वे एक तिहाई पीएम हैं–नरेंद्र–नायडू–नीतीश। वे गठबंधन नहीं चला पाएंगे। वे (भाजपा) लोकतंत्र में नहीं श्डेमो–कुर्सीश में विश्वास करती हैं। भारत का संविधान दिखाते हुए रमेश ने कहा कि आज इसकी जीत हुई है। हम सत्ता या कौन बनेगा प्रधान मंत्री के लिए नहीं, बल्कि संविधान को बचाने के लिए लड़ रहे हैं। उन्होंने एक्स पोस्ट में लिखा कि भाजपा की संसदीय कमेटी की बैठक नहीं हुई पर छक। ने एक –तिहाई प्रधान मंत्री पहले ही नियुक्त कर दिया। यह इसलिए किया गया क्योंकि नरेंद्र मोदी को विश्वास नहीं था कि भाजपा के चुने हुए सांसद उनको अपना नेता चुनेंगे या नहीं। खुद बहुत कम वोटों से जीते सांसद नरेंद्र मोदी की व्यक्तिगत अनिश्चितता और बौखलाहट का यह सीधा प्रमाण है। उन्होंने भाजपा के सांसदों की 'बाईपास सर्जरी' कर दी है। कांग्रेस सांसद कुमारी शैलजा ने कहा कि इस बार अकेले बीजेपी को बहुमत नहीं मिला है। देश ने बीजेपी की विचारधारा को खारिज कर दिया है। प्छक्। ब्लॉक की बैठक आयोजित की गई है। हमारे शीर्ष नेता सही समय पर निर्णय लेंगे। अपने संबोधन में पीएम मोदी ने ईवीएम के बहाने विपक्ष पर जमकर तंज कसा। मोदी ने कहा कि 4 जून को जब नतीजे आ रहे थे तो मैं काम में व्यस्त था। बाद में फोन आने लगे। मैंने किसी से पूछा, आंकड़े तो ठीक हैं, बताओ ईवीएम जिंदा है कि मर गया। मोदी ने कहा कि विपक्ष के लोगों ने यह सुनिश्चित करने का निर्णय लिया था कि लोग भारत के लोकतंत्र और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास करना बंद कर दें। उन्होंने लगातार ईवीएम का दुरुपयोग किया। मुझे लगा था कि वे ईवीएम की शवयात्रा निकालेंगे। लेकिन 4 जून की शाम तक उनको ताले लग गए। ईवीएम ने उनको चुप करा दिया। यह भारत के लोकतंत्र की ताकत है, इसकी निष्पक्षता है। मुझे उम्मीद है कि मुझे 5 साल तक ईवीएम के बारे में सुनने को नहीं मिलेगा।

नयी लोकसभा में विपक्ष पहले की अपेक्षा मजबूत होगा : फारूक अब्दुल्ला

श्रीनगर, एजेंसी। नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने शुक्रवार को यहां कहा कि ''तानाशाही'' के दिन गए और नयी लोकसभा में विपक्ष पहले की अपेक्षा मजबूत होगा। पूर्ववर्ती जम्मू कश्मीर राज्य के मुख्यमंत्री रहे अब्दुल्ला ने कहा कि लोगों ने जनादेश दे दिया है और संविधान की रक्षा हुई है।

उन्होंने संवाददाताओं से कहा, '' इस बार पहले की अपेक्षा मजबूत विपक्ष होगा। जब मैं संसद में था तब हम कमजोर थे। तानाशाही थी और कोई हमारी बात नहीं सुनता था लेकिन अल्लाह का शुक्र है कि तानाशाही खत्म हुई।'' अब्दुल्ला ने यह बात इस प्रश्न के उत्तर में कही कि क्या नयी लोकसभा में विपक्ष पहले की अपेक्षा मजबूत होगा क्योंकि उनकी संख्या बढ़ी है। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के लगातार तीसरी बार सरकार बनाने के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, ''उन्हें सरकार बनाने दीजिए, फिर हम देखेंगे।'' उन्होंने कहा, '' आप मीडिया में हैं, हम और आप दोनों देखेंगे। क्या जल्दी है?'' संसदीय चुनावों के नतीजों के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में अब्दुल्ला ने कहा कि लोगों ने अपना फैसला दे दिया है। अब्दुल्ला ने कहा, '' उन्होंने दिखाया कि ताकत जनता के पास है, और इन चुनावों में यह साबित हुआ। यह भारी उपलब्धि है। लोगों के पास मतदान का अधिकार है, वह किसी को भी बना और मिटा सकते हैं।'' चुनाव परिणाम से पहले आए एग्जिट पोल में भाजपा को भारी बहुमत मिलने का दावा किया गया था। इस बारे में पूछने पर नेकां अध्यक्ष ने कहा कि एग्जिट पोल के कर्ताधर्ताओं को अपनी दुकानें बंद कर लोगों से माफी मांगनी चाहिए।

लोकसभा अध्यक्ष पद की मांग करें तेदेपा और जदयू : आदित्य ठाकरे

मुंबई। शिवसेना (यूबीटी) के नेता आदित्य ठाकरे ने शुक्रवार को कहा कि केंद्र में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की सरकार बनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका में आए तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) और जनता दल यूनाइटेड (जदयू) को लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए अड़े रहना चाहिए। ठाकरे ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में ठाकरे ने दावा किया कि सरकार बनाते ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अपने सहयोगी दलों को तोड़ने की कोशिश में लग जाएगी। उन्होंने कहा, "नए राजग के संभावित सहयोगी दलों को एक विनम्र सुझाव है। स्पीकर (लोकसभा अध्यक्ष) का पद हासिल करें।" ठाकरे ने अप्रत्यक्ष रूप से शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) में हुए विभाजन का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा, "भाजपा की चालों का अनुभव हो चुका है, जैसे ही वे आपके साथ सरकार बनाएंगे, वादे तोड़ देंगे और आपकी पार्टियों को भी तोड़ने की कोशिश करेंगे। यह आपको पहले ही अनुभव हो चुका होगा।" चूंकि भाजपा सरकार बनाने के लिए आवश्यक बहुमत से पीछे रह गई है, इसलिए प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी के तीसरे कार्यकाल के लिए तेदेपा और जदयू का समर्थन महत्वपूर्ण हो गया है।

नीट परीक्षा में धांधली हुई, उच्चतम न्यायालय की निगरानी में जांच हो : मल्लिकार्जुन खरगे

नयी दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस ने शुक्रवार को मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट (स्नातक) में धांधली का आरोप लगाया और कहा कि इसकी उच्चतम न्यायालय की निगरानी में जांच होनी चाहिए ताकि प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को न्याय मिल सके। नीट का परिणाम गत चार जून को घोषित किया गया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने एक्स पर पोस्ट किया, पेपर लीक, धांधली और भ्रष्टाचार नीट समेत कई परीक्षाओं का अभिन्न अंग बन गया है।इसकी सीधी ज़िम्मेदारी मोदी सरकार की है। उन्होंने कहा कि अभ्यर्थियों के लिए भर्ती परीक्षाओं में भाग लेना, फिर अनेकों अनियमितताओं से जूझना, पेपर लीक के चक्रव्यूह में फँसना–उनके भविष्य से खिलवाड़ है। कांग्रेस अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि भाजपा ने देश के युवाओं को ठगा है। उन्होंने कहा, हमारी मांग है कि उच्चतम न्यायालय की देखरेख में एक उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए जिससे नीट व अन्य परीक्षाओं में भाग लेने वाले हमारे प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को न्याय मिले। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने एक्स पर पोस्ट किया, पहले नीट परीक्षा का पेपर लीक हुआ और अब छात्रों का आरोप है कि इसके परिणाम में भी भ्रष्टाचार हुआ है। एक ही सेंटर के 6 छात्रों को 720 में से 720 अंक मिलने पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं और कई तरह की अनियमितताओं की बातें सामने आ रही हैं। दूसरी ओर, परिणाम आने के बाद देश भर में कई बच्चों के आत्महत्या करने की खबरें हैं। यह बहुत दुखद और झकझोरने वाला है। उन्होंने सवाल किया कि सरकार लाखों छात्रों की आवाज को अनसुना क्यों कर रही है? प्रियंका गांधी ने कहा, छात्र–छात्राओं को नीट परीक्षा के परिणाम में धांधली से जुड़े वाजिब सवालों के जवाब चाहिए। क्या सरकार की जिम्मेदारी नहीं बनती कि वो जांच कराकर इन वाजिब शिकायतों का निस्तारण करे? कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने भी इस मामले की उच्चतम न्यायालय की निगरानी में जांच की मांग की। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट में लाखों परीक्षार्थियों के साथ घोटाला पूरी तरह से अस्वीकार्य और अक्षम्य है।

पेसीएम अभियान मामले में राहुल की जमानत याचिका मंजूर

बेंगलुरु, एजेंसी। एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में कर्नाटक में बेंगलुरु की एक अदालत ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की प्रदेश इकाई की ओर से

पेसीएम अभियान को लेकर दायर मानहानि मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी की जमानत याचिका को शुक्रवार को मंजूरी दे दी। यह मामला पिछले साल कर्नाटक विधानसभा चुनावों से पहले कांग्रेस द्वारा शुरू किए गए विवादास्पद 'पेसीएम' अभियान से उपजा है, जिसमें तत्कालीन भाजपा सरकार पर अपने 2019–2023 के कार्यकाल के दौरान बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार करने का आरोप लगाया गया था। न्यायाधीश केएन शिवकुमार ने कांग्रेस नेता को व्यक्तिगत रूप से अदालत में पेश होने के निर्देश दिये थे।

मोदी ने आडवाणी और जोशी से मिलकर आशीर्वाद लिया

नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का सर्वसम्मित से नेता चुने जाने के बाद शुक्रवार को यहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वयोवृद्ध

नेता लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी से मिलकर आशीर्वाद लिया। संसद भवन परिसर में स्थित संविधान सदन में हुई राजग की बैठक में श्री मोदी को गठबंधन के संसदीय दल का नेता चुना गया था। राजग ने लोकसभा चुनाव में लगातार तीसरी जीत हासिल करने के बाद श्री मोदी को तीसरी बार गठबंधन के संसदीय दल का नेता चुना है। श्री मोदी संविधान सदन से सीधे श्री आडवाणी के आवास के लिए रवाना हो गये। श्री मोदी ने श्री आडवाणी को पुष्पगुच्छ देकर उनका आशीर्वाद लिया और उनकी कुशलक्षेम पूछी। श्री आडवाणी के साथ उस समय उनकी पुत्री प्रतिभा आडवाणी भी थी। इसके बाद वह श्री जोशी से मिलने उनके आवास पर गये और उनका आशीर्वाद लिया। उन्होंने श्री जोशी को पुष्पगुच्छ प्रदान किया और आशीर्वाद लिया। श्री जोशी ने श्री मोदी को अंगवस्त्र पहनाया। श्री मोदी ने उनके साथ कुछ देर बातचीत की तथा उनका हाल चाल पूछा।

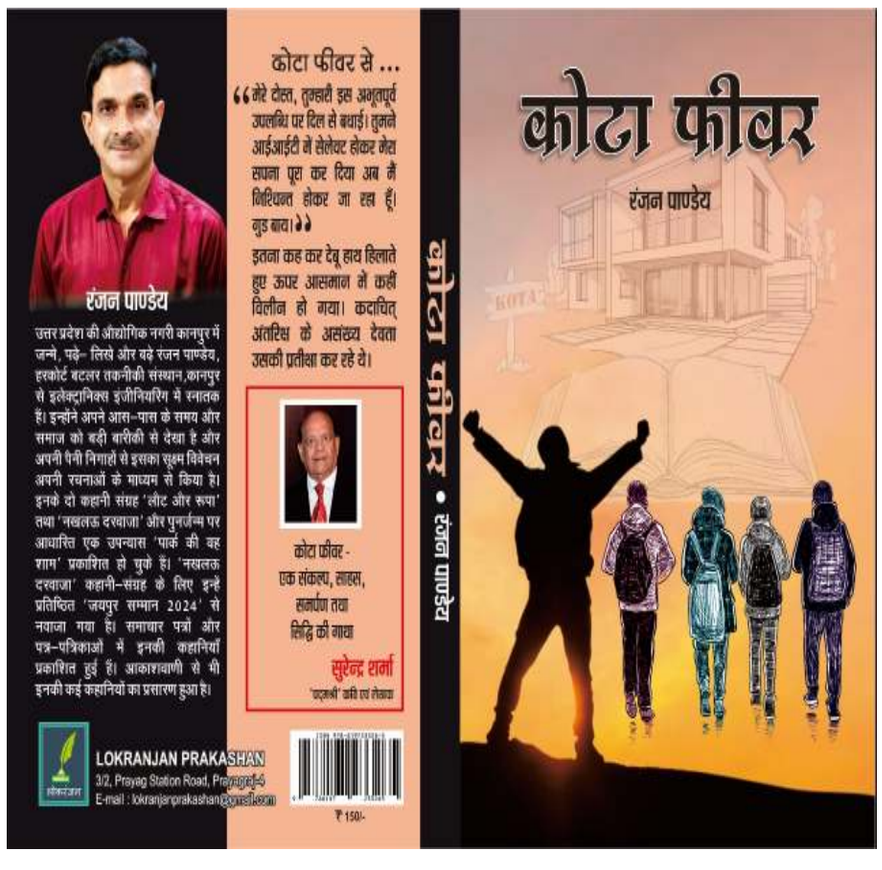

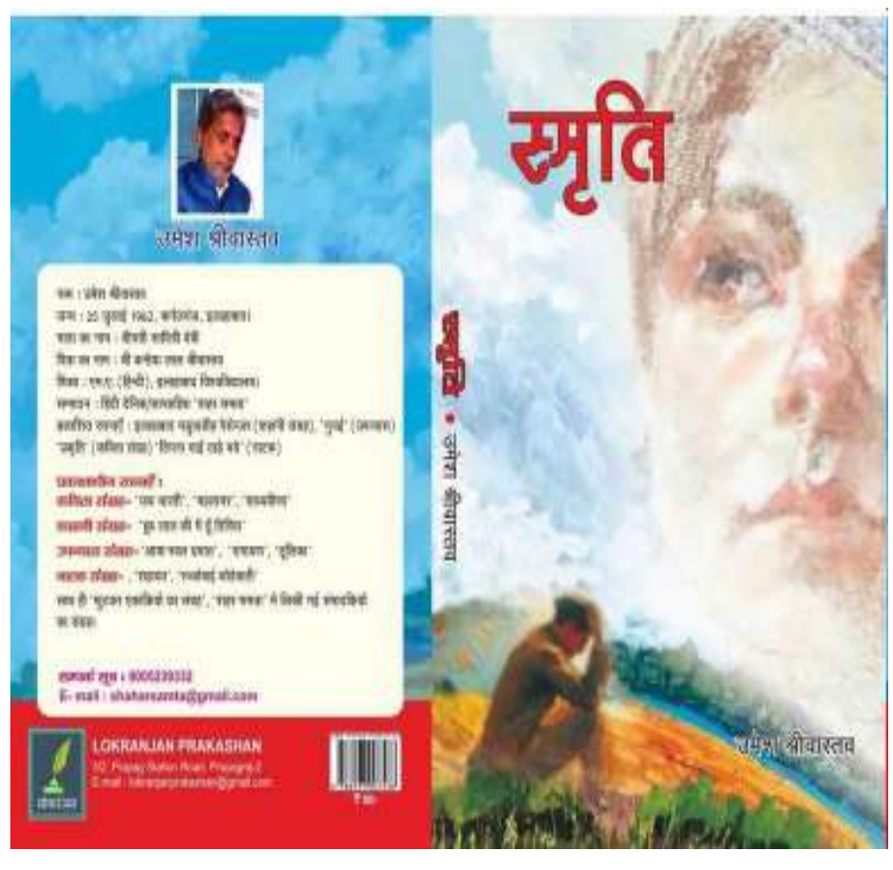

इलाहाबाद में मंत्री नंदी के बूथ पर हारी भाजपा

मुस्लिम बाहुल्य इलाकों में 20 से 40 तक सिमटी भाजपा, कांग्रेस को हुआ फायदा

प्रयागराज। नीरज त्रिपाठी काफी प्रयासों के बावजूद इलाहाबाद सीट पर कमल खिलाने में नाकामयाब रहे। पहली बात तो वह राजनीति के अखाड़े में नए थे और दूसरी बात भाजपा के नेताओं की उदासीनता व भीतरघात भी हार का कारण बन गया। यही कारण रहा कि सपा से कांग्रेस में शामिल होने वाले उज्जवल रमण सिंह 40 साल बाद इस सीट को जीतकर कांग्रेस की झोली में डाल दिया। अब भाजपा की हार की समीक्षा हो रही है। सीएम योगी के मंत्रिमंडल में शामिल कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी व उनकी पत्नी पूर्व महापौर अभिलाषा गुप्ता के बूथ पर भी भाजपा का कमल नहीं खिल सका। नंदी का बूथ बहादुरगंज स्थित ठाकुरदीन का हाता (बूथ संख्या 210) है। यहां पर कांग्रेस को 362 वोट मिले जबकि भाजपा को इस बूथ पर महज 105 वोट ही मिले। वहीं नंदी के ही विधानसभा क्षेत्र में कई बूथों पर भाजपा महज 20 से 40 सीटों तक ही सिमट गई जबकि कांग्रेस को 300 से 400 वोट मिले। इसमें अधिकांश मुस्लिम बाहुल्य इलाका भी है।

करेली में कांग्रेस को 1521, भाजपा को महज 69 वोट : शहर दक्षिणी का करेली बूथ मुस्लिम बाहुल्य है। यहां पर कांग्रेस को 1521 वोट मिले जबकि भाजपा को महज 69 वोट मिले। दरियाबाद में 2332 कांग्रेस तो भाजपा को 653 वोट मिले। नखास कोहना में कांग्रेस को 2491 और भाजपा को महज 1074 वोट, तुलसीपुर में कांग्रेस को 1289 व भाजपा को 685 वोट, मीरापुर में कांग्रेस को 3330 व भाजपा को 445 वोट, मीरापुर–2 में कांग्रेस को 1049 व भाजपा को 5701 वोट मिले। नखास कोहना के बूथ संख्या 9 पर कांग्रेस को 476 तो भाजपा को 20 वोट ही मिल सके। इसी तरह तमाम बूथ हैं जहां भाजपा को बहुत अंतरों से हारी है।

अपने ही विधानसभा हार गए प्रवीण पटेल : फूलपुर सीट से प्रवीण पटेल सांसद तो चुने गए लेकिन विधानसभावार वोटों की बात की जाए तो वह अपने ही विधानसभा क्षेत्र से हार गए। दरअसल, प्रवीण फूलपुर से ही 2022 के विधानसभा चुनाव में जीते थे और विधायक चुने गए थे लेकिन इस बार जब वह सांसद के प्रत्याशी बने थे वह सपा से कम वोट हासिल कर पाए। सपा के अमरनाथ मौर्य को फूलपुर विधानसभा क्षेत्र से 1,07510 जबकि प्रवीण पटेल को 89650 वोट मिले। शहरी वोटरों की बदौलत प्रवीण पटेल सांसद बनने में सफल रहे। क्योंकि सोरांव और फाफामऊ से भी प्रवीण पटेल सपा के अमरनाथ से हार चुके थे। फाफमऊ में सपा को 88999 वोट मिले जबकि भाजपा को 80166 वोट मिले। खास बात यह है कि फाफामऊ विधानसभा से गुरु प्रसाद मौर्य हैं जो भाजपा के विधायक हैं।

शहर पश्चिमी और उत्तरी के वोटरों ने प्रवीण को बनाया सांसद : फूलपुर संसदीय क्षेत्र में पांच विधानसभाएं हैं। तीन विधानसभा सीट पर प्रवीण पटेल अमरनाथ मौर्य से कम वोट पाए और तीनों जगह से वह हार गए थे। लेकिन शहर उत्तरी और पश्चिमी की जनता ने प्रवीण पटेल को सांसद बनाया। शहरी उत्तरी में प्रवीण को 91440 और अमरनाथ को 61735 वोट जबकि पश्चिमी से प्रवीण को 106414 और अमरनाथ को 91629 वोट मिले। इन दोनों विधानसभाओं में सपा हार गई। उत्तरी से भाजपा के हर्षवर्धन वाजपेयी तो पश्चिमी से भाजपा के ही विधायक सिद्धार्थनाथ सिंह हैं।

इलाहाबाद सहित 4 सीटों पर जमानत नहीं बचा सकी बसपा

सुस्त हुई हाथी की चाल, फूलपुर में अर्श से फर्श पर पहुंची पार्टी का बुरा हाल

प्रयागराज। कभी सोशल इंजीनियरिंग का फॉर्मूला लेकर यूपी की सत्ता हासिल करने वाली बसपा अब प्रयागराज समेत सूबे के अन्य जिलों में अपनी जमीन बचाने की कवायद में फेल है। प्रयागराज कभी बसपा का गढ़ बनने लगा था। पार्टी की नींव रखने वाले कांशीराम प्रयागराज की फूलपुर सीट को ही अपनी कर्म स्थली मानकर चुनाव लड़ते रहे। विधानसभा चुनाव हो, लोकसभा चुनाव या फिर नगर निकाय सब में बसपा के हाथी की चाल सुस्त होते होते पूरी तरह थम गई। नतीता यह होने लगा कि बसपा के प्रत्याशी अपनी जमानत तक बचाने में फेल हो गए।

बीएसपी अर्श से फर्श पर कैसे पहुंचती गई

बहुजन समाज पार्टी का प्रयागराज मंडल में खूब दबदबा रहा है। यहां भाजपा के बाद सपा और फिर बसपा का नाम ही चलता रह है। कांग्रेस अब खोई हुई जमीन वापस पाने लगी है। 2007 में उत्तर प्रदेश में सरकार बनाने वाली बहुजन समाज पार्टी (बसपा) मंडल के इलाहाबाद, फूलपुर, कौशाम्बी और प्रतापगढ़ लोकसभा सीट पर 2024 में जमानत भी नहीं बचा सकी। ऐसा करीब करीब हर चुनावों में हो रहा है। पार्टी के गठन के बाद से इलाहाबाद संसदीय सीट और प्रतापगढ़ में हर प्रयास बेकार रहा है। इन दोनों सीटों पर चुनाव दर चुनाव बसपा के वोट प्रतिशत में उतार चढ़ाव देखने को मिला। अगर तीनों जनपदों के चारों सीटों की बात करें तो फूलपुर बसपा प्रत्याशी जगन्नाथ पाल ही सर्वाधिक 82586 मत प्राप्त किया है। प्रतापगढ़ में प्रथमेश मिश्र 80144, कौशाम्बी में शुभनारायण 55858 और इलाहाबाद में रमेश कुमार पटेल ने 49144 मत प्राप्त किया है। लेकिन यह सभी अपनी जमानत नहीं बचा सके हैं।

बसपा ने पहला चुनाव 1988 में पूरी ताकत से लड़ा

इलाहाबाद सीट पर पार्टी के सिंबल पर पहला चुनाव 1988 में लड़ा गया, यह आम नहीं बल्कि उप चुनाव था, जो अमिताभ बच्चन के इस्तीफा देने के बाद हुआ था। इस चुनाव में वीपी सिंह से मुकाबला करने के लिए बसपा के संस्थापक कांशीराम मैदान में उतरे थे। लेकिन वीपी सिंह और सुनील शास्त्री के बीच हुई लड़ाई में वह तीसरे स्थान पर चले गए थे। 1989 के चुनाव में जंग बहादुर पटेल बसपा प्रत्याशी थे, उन्हें भी तीसरा स्थान मिला।

1991 में एक बार फिर जंग बहादुर पटेल मैदान में आए और चौथे स्थान पर चले गए। 1996 के चुनाव में रामसेवक सिंह, 1998 में केपी श्रीवास्तव और 2004 में आरके सिंह पटेल तीसरे स्थान पर रहे। 2009 के चुनाव में जब अशोक बाजपेई बसपा से मैदान में उतरे तो पार्टी मुख्य मुकाबले में आई। बाजपेई दूसरे स्थान पर रहे। 2014 में पार्टी फिर तीसरे स्थान पर चली गई।

फूलपुर सीट पर कांशीराम पटेलों के नेता रहे

फूलपुर सीट पर पार्टी के सिंबल पर पहला चुनाव 1989 में लड़ा गया। उस चुनाव में बेनी माधव बिंद प्रत्याशी थे, जो तीसरे स्थान पर रहे। 1991 के चुनाव में बिंद फिर बसपा से लड़े और इस बार अपना प्रदर्शन सुधार कर वह दूसरे स्थान पर रहे। 1996 में बसपा से पार्टी संस्थापक कांशीराम मैदान में उतरे पर नतीजा 1991 के चुनाव जैसा रहा, उन्हें भी दूसरा स्थान मिला। 1998 में रामपूजन पटेल बसपा से लड़े और तीसरे स्थान पर चले गए। 1999 में तुलसी राम यादव मैदान में उतरे वह भी तीसरे पर रहे। 2004 में केशरी देवी मैदान में आईं, वह मुख्य मुकाबले में रहीं उन्हें दूसरा स्थान मिला। 2009 में पहली बार बसपा का खाता खुला और कपिलमुनि करवरिया सांसद निर्वाचित होकर देश की सबसे बड़ी पंचायत में पहुंचे, लेकिन 2014 के चुनाव में करवरिया तीसरे स्थान पर चले गए।

जमानत देते वक्त बोझिल शर्तें न लगाएं अदालतें

देवरिया के मामले में हाईकोर्ट ने कहा– ऐसी शर्तों की वजह से कैदी की रिहाई में मुश्किलें आती है

प्रयागराज। जमानत मिलने के बाद बहुत सारे कैदी जेल से रिहा नहीं हो पाते, वजह जमानत की शर्तों को माना गया। ऐसे में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा है कि अदालतें जमानत देते वक्त बेवजह की शर्तें न लगाएं। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि अदालतें अभियुक्त की जमानत मंजूर करते समय ऐसी बोझिल शर्तें न लगाएं जिसके चलते उसकी रिहाई ही न हो सके। कोर्ट ने जमानत मंजूर होने के बाद भी दो में से एक प्रतिभूति परिवार के सदस्य की हो, इस शर्त के कारण एक साल से जेल में बंद याची की सामाजिक आर्थिक स्थिति अनुसार शर्त पर रिहा करने का ट्रायल कोर्ट देवरिया को आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा कि अरविंद सिंह केस में बोझिल शर्त के कारण यदि एक हफ्ते तक अभियुक्त की जमानत पर रिहाई नहीं हो पाती तो ट्रायल कोर्ट व जिला विधिक सेवा समिति जमानत आदेश संशोधित कराने की अर्जी दे, ताकि अभियुक्त की रिहाई सुनिश्चित हो सके। कोर्ट ने इस फैसले का पालन न करने पर नाराजगी जताई और कहा कि इस फैसले का पालन किया जाय। कोर्ट ने याची के परिवार के सदस्य की प्रतिभूति की शर्त वापस ले ली है और जिला जज देवरिया से जांच कर ट्रायल कोर्ट व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को उचित परामर्श देने का आदेश दिया है।

अदालत ने दिया रिहाई का आदेश

अदालत ने याची को 18 मई 23 को जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया। याची के परिवार का कोई भी सदस्य उत्तर प्रदेश में नहीं है।पिता विदेश में हैं।वह आने में असमर्थ हैं । जिससे प्रतिभूति जमा न होने के कारण वह जेल में एक साल से बंद हैं। इस पर कोर्ट ने अरविंद सिंह केस का हवाला दिया और कहा कि ट्रायल कोर्ट व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण का दायित्व है कि अभियुक्त एक हफ्ते तक रिहा नहीं होता तो आदेश संशोधित करने की अर्जी दे ताकि रिहाई हो सके।

समझिए अदालत ने क्या कहा : यदि कोई कैदी ट्रायल कोर्ट द्वारा तय किए गए जमानतदारों की व्यवस्था नहीं कर पाता है तो वह कम जमानतदार के लिए विद्वान ट्रायल कोर्ट में आवेदन कर सकता है। कैदी की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा समुदाय में जड़ों से संबंधित तथ्यों को आवेदन में बताया जाएगा। इसी प्रकार डीएलएसए (जिला लीगल सर्विसेज अथॉरिटी) का यह कर्तव्य है कि वह उन कैदियों की स्थिति की जांच करे जिन्हें जमानत पर रिहा किया गया है, लेकिन वे जमानत पर रिहा नहीं हुए हैं। जमानत आदेश के सात दिनों के भीतर कैदी को रिहा किया जाए । यदि कैदी जमानतदारों की व्यवस्था नहीं कर सकते हैं तो उन्हें इस निर्णय के आलोक में जमानतदारों को फिर से तय करने के लिए तुरंत आवेदन करने की सलाह और सहायता दी जाय। जब कैदी ऐसा आवेदन करता है तो ट्रायल कोर्ट इस निर्णय के अनुरूप जांच करेगा और जमानतदारों को तय करने के लिए प्रासंगिक मानदंडों पर विचार करते हुए एक तर्कसंगत आदेश पारित करेगा।

प्रत्येक ट्रायल कोर्ट कैदी की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों और फरार होने की संभावना और समुदाय में उसकी जड़ों के बारे में खुद को संतुष्ट करने और उसके अनुरूप जमानतदारों को तय करने के लिए बाध्य है। राज्य प्राधिकरण या अन्य विश्वसनीय एजेंसियां, जिन्हें अदालत निर्देश दे सकती है, आवश्यक विवरण तुरंत उपलब्ध कराएं। यदि कैदी किसी अन्य राज्य से है और स्थानीय जमानतदार पेश करने में असमर्थ है, तो कैदी के गृह जिले या उसकी पसंद के किसी अन्य स्थान से जमानतदार, जो उक्त जिले और राज्य के सक्षम क्षेत्राधिकार वाले न्यायालय द्वारा निर्धारित किया गया हो, विचारण न्यायालय द्वारा स्वीकार किए जाएंगे।

कैदीध्वकील प्रथम दृष्टया जमानत आवेदन में कैदी की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विवरण दे सकते हैं। इससे जमानतदारों से संबंधित मुद्दे पर शीघ्र विचार करने में सुविधा होगी। जमानत की शर्तें तय करते समय न्यायालयों को कैदी की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों की जांच करनी चाहिए। इसके अलावा, न्यायालयों को ऐसी शर्तें नहीं लगानी चाहिए, जिन्हें कैदी अपनी अभावग्रस्त परिस्थितियों या अभाव की स्थिति के कारण पूरा न कर सके। कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि टिप्पणियों को किसी भी न्यायिक अधिकारी के खिलाफ प्रतिकूल रूप से नहीं समझा जाएगा। इस आदेश की एक प्रति सचिव, राज्य विधिक सेवा को भेजी जाएगी।

सेक्स रैकेट के वीडियो, पोर्नोग्राफी की जांच लैब से कराएं

इलाहाबाद हाईकोर्ट का आदेश, पत्नी पर बेटियों को सेक्स रैकेट में उतारने का शक

प्रयागराज। पति ने अपनी पत्नी के सेक्स रैकेट और पोर्नोग्राफी में शामिल होने के आरोप लगाए हैं। उन्हें शक है कि पत्नी उनकी दो बेटियों को मजबूर कर सेक्स रैकेट का हिस्सा बना चुकी है। इस पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जांच के आदेश दिए हैं। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पति के पेश किए गए सीडीध्डीवीडी की फोरेंसिक जांच के आदेश दिए हैं। आरोप है कि उस सीडीध्डीवीडी में उसकी पत्नी से संबंधित न्यूड वीडियो हैं।

पति को शक– बेटियों को भी सेक्ट रैकेट में शामिल कर दी होगी : याची का कहना है कि उसकी पत्नी किसी सेक्स रैकेट और पोर्नोग्राफी में शामिल है। जिसके कारण वे दोनों अलग–अलग रह रहे हैं। शक है कि उसकी दो नाबालिग बेटियों को भी सेक्स रैकेट का हिस्सा बनने के लिए मजबूर किया गया होगा। याची ने कहा कि वह एक चिंतित पिता है, जो अपनी दो नाबालिग बेटियों की जान बचाना चाहता है। उन्हें अच्छी शिक्षा देना चाहता है ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें। इस याचिका के समर्थन में दाखिल हलफनामे में लगाए गए आरोपों और उनकी पत्नी के खिलाफ की गई गंभीर शिकायतों व उन वेबसाइटों के विवरण जिन पर अश्लील दृश्य अपलोड किए गए थे, उसे देखते हुए जस्टिस अजीत कुमार ने कर्नाटक, बेंगलुरू स्थित फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला द्वारा डीवीडी और सीडी की तकनीकी जांच कराने का निर्देश देना आवश्यक समझा । पारिवारिक न्यायालय द्वारा वीडियो की फोरेंसिक जांच के लिए उसके आवेदन को खारिज कर दिया गया था।याची (पति) ने फेमिली कोर्ट के आदेश को हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर चुनौती दी थी।

पत्नी की आवाज की भी जांच होगी

पति ने कुछ इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य प्रस्तुत किए और पारिवारिक न्यायाधीश के समक्ष एक आवेदन प्रस्तुत किया कि सीडीध्डीवीडी, जिनमें कुछ ऑडियो और वीडियो थे। उसका विज्ञान प्रयोगशाला से सत्यापन कराया जाए। सीडी के साथ विपक्षी (पत्नी) की आवाज का नमूना भी जांच को भेजा जाए। पारिवारिक न्यायालय ने आवेदन को स्वीकार कर लिया और निर्देश दिया कि ऑडियो और वीडियो सीडी को 2018 में निदेशक, फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला, यूपी, लखनऊ को भेजा जाए। पक्षों (पति और पत्नी) की आवाज के नमूने लेने के बाद, फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला ने जुलाई 2022 में एक रिपोर्ट भेजी, जिसमें बताया गया कि डिजिटल डेटा में महिला और पुरुष की आवाज पत्नी और याचिकाकर्ताधपति के साथ संभावित रूप से समान पाई गई। जहां तक वीडियो डिजिटल डेटा का सवाल है, चूंकि यह ट्रांसक्रिप्शन के अनुसार नहीं था। इसलिए ऑडियो और वीडियो सीडी और डीवीडी की जांच करते समय इसकी जांच नहीं की जा सकी। इसके बाद याचिकाकर्ता ने यह आवेदन दिया कि अगर फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरी, यूपी, लखनऊ डीवीडी की जांच करके रिपोर्ट नहीं भेज सकती है, तो इसे किसी दूसरी एजेंसी को भेजा जाना चाहिए। फैमिली कोर्ट ने जनवरी 2023 के आदेश के तहत इस आवेदन को खारिज कर दिया और इसे हाईकोर्ट में चुनौती दी गई। याची की दलीलें सुनने के बाद, न्यायालय ने अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीश, पारिवारिक न्यायालय द्वारा पारित आदेश को रद्द कर दिया, तथा पारिवारिक न्यायाधीश को निर्देश दिया कि वे ऑडियो और वीडियो दोनों सीडीध्डीवीडी की फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला, कर्नाटक, बेंगलुरू द्वारा नए सिरे से जांच कराएं। न्यायालय ने यह भी निर्देश दिया है कि प्रयोगशाला को सीडीध्डीवीडी प्राप्त होने की तारीख से एक महीने के भीतर रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा जाए। अदालत ने याचिका का निपटारा करते हुए आगे आदेश दिया, ष्परिवार न्यायालय इस आदेश की प्रमाणित प्रति प्रस्तुत करने के दो सप्ताह के भीतर उचित आदेश पारित करेगा।

प्रोफेसर डॉ. अनूप की सड़क हादसे में मौत

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष थे, गया में हुआ हादसा

प्रयागराज। गया में सड़क हादसे में तीन लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। मरने वालों में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष अनूप कुमार और उनके पिता सुरेंद्र सिंह शामिल हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनूप कुमार की मार्ग दुर्घटना में मौत की खबर से शिक्षकों और छात्रों में शोक की लहर दौड़ गई। डॉ. अनूप ने जून–2013 में अर्थशास्त्र विभाग में बतौर असिस्टेंट प्रोफेसर ज्वाइन किया था। वह इविवि के छात्र भी रहे। उन्होंने वर्ष 2006 में अर्थशास्त्र विभाग से एमए किया और इसके बाद प्रो. उमाशंकर राय के निर्देशन पर पीएचडी की थी।

पत्नी बेटियों संग गई थी मायके : असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनूप कुमार का परिवार शहर के बैंक रोड इलाक में रहता रहा है। पत्नी जया और दो बेटियों आठ वर्षीय अनन्या और पांच वर्षीय छोटी बेटी यहीं रहकर पढ़ाई करती रही हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ग्रीष्मकालीन अवकाश होने के कारण वह अपने गांव गए हुए थे और पत्नी दो बेटियों के साथ गोरखपुर स्थित अपने मायके में थी। डॉ. अनूप कुमार ने 2010 में बुंदेलखंड विश्वविद्यालय में बतौर प्रवक्ता नौकरी शुरू की और इसके बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय आ गए। वह यहां माइक्रो इकनॉमिक्स पढ़ाया करते थे। प्रो. मनमोहन कृष्ण ने बताया कि वह बैक रोड स्थित शिक्षक कॉलोनी में पत्नी और दो बेटियों के साथ रहते थे। उन्होंने ने डॉ. अनूप के निधन को विश्वविद्यालय के लिए अपूर्णनीय क्षति बताया है। ऑटा के अध्यक्ष प्रो. एआरआर सिद्दीकी एवं अन्य पदाधिकारियों ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए डॉ. अनूप को श्रद्धांजलि दी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के के मीडिया संयोजक अभिनव मिश्र ने भी शोक व्यक्त किया है।

प्रयागराज में पहली आजादी आंदोलन के नायकों को नमन

जस्टिस क्षितिज शैलेंद्र बोले-बच्चों को इंटरनेट की दुनिया से निकाल किताबी दुनिया में लाना होगा

प्रयागराज। जरा याद करो कुर्बानी पहली आजादी महोत्सव प्रयागराज में शुक्रवार से शुरू हो गया है। 7 से 16 जून तक 1857 की याद में यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। इस मौके पर न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेंद्र ने क्षेत्रीय अभिलेखाकार (संस्कृति विभाग) एवं भारत भाग्य विधाता के तत्वाधान में खुसरोबाग बरगद के पेड़ के नीचे आजादी के अभिलेख प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। इस मौके पर हुई संगोष्ठी में न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेन्द्र ने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि जिंदा हैं हम, तब यह जज्बात पैदा होगा। जब हम दैनिक सामान्य दिनचर्या से ऊपर उठकर हमेशा देश, गरीबों, राष्ट्र के बारे में सोचें, देश की संपदा कैसे सुरक्षित रहे और विकास कैसे हो इसे हर किसी को देखना होगा। उन्होंने कहा कि इंटरनेट की दुनिया से बाहर निकलकर देश के बच्चों को किताबी दुनिया की ओर बढ़ना होगा तभी बलिदान का कर्तव्य और देश सेवा व्यर्थ नहीं जाएगी। शायरी के माध्यम से कहा कि शहीदों को याद कर हम वास्तव में जिंदा हैं नहीं तो मुर्दे होते। हमें शहीदों की भावनाओं का सम्मान करते हुए राष्ट्र के प्रति समर्पित रहना होगा।

यहां की माटी, पुरखों को नमन : कमिश्नर विजय विश्वास पंत ने कहा कि सर्वप्रथम मैं माटी को प्रणाम करता हूं। अपने पुरखों को नमन करता हूं। भारत भाग्य विधाता टीम ने वैदिक, मध्य और आधुनिक इतिहास को बेहतर पिरोया है। पौराणिक पहचान को पुनःजीवित कराया हैं। मैं इस मुहिम के साथ हूं। पूर्वजों को याद कर शहीद परिवारों का मान बढ़ाया है। देश की आजादी में कुर्बानी देने वालों को शहीदवाल में प्रदर्शित कर भारतीय शहीदों को सम्मान बढ़ाने का कार्य किया।

पहली आजादी की क्रांति हिंदू–मुस्लिम ने मिलकर लड़ी : शहीदवाल संस्थापक, कार्यक्रम संयोजक वीरेंद्र पाठक ने कहा कि इलाहाबाद में पहली आजादी की क्रांति में हिंदू और मुस्लिम ने मिलकर की। हमारे पूर्वज आजादी की लड़ाई में कूदे। उन्होंने कहा पूर्वजों ने पेंशन, भत्ते के लिए आजादी की लड़ाई नहीं लड़ी। देश को आजाद कराने में कुर्बानी दी। 1857 हमारे पुरखों और अंग्रेजों की लड़ाई थी। गुलामी से मुक्ति और आजादी के लिए हमारे पुरखों ने कुर्बानी दी थी। उस समय अंग्रेजों के शहीद होने पर सम्मान के साथ दफनाया जाता था। मगर भारतीयों का कोई अता पता नहीं होता था। अंग्रेजों ने बांटों और राज करो की नीति यहीं से शुरू कर भारत में शासन कर रहे थे। इसी के विरुद्ध पूर्वजों ने एकजुट होकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। जीए आशुतोष संड ने कहा कि यह हमारे पुरखों की गौरव गाथा है। 90 साल आजादी के पहले इलाहाबाद आजाद हो गया था। यह क्रांतिकारी का मुख्यालय था। उन्होंने कहा कि खुसरोबाग के बाहर द्वार पर एक बोर्ड हो, जिसमें क्रांतिकारियों के मुख्यालय का भी जिक्र हो। संचालन प्रमोद शुक्ला ने किया। धन्यवाद ज्ञापन कृष्ण मोहन चौधरी प्रभारी खुशरूबाग ने दिया। इस मौके पर श्रद्धांजलि देने वालों में शैलेंद्र अवस्थी, अनिल गुप्ता, अनिल पांडे, दिनेश तिवारी, शशिकांत मिश्रा, विनोद, नीरज अग्रवाल, राजकुमार, शैलेंद्र द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

गर्मी बरकरार, दोपहर में 42 डिग्री तक जाएगा तापमान

प्रयागराज। प्रयागराज में कल गुरुवार को जहां सुबह लोगों को ठंडी हवा चलने से थोड़ी राहत मिली तो आज शुक्रवार को फिर गर्मी का प्रकोप दिखा। सुबह से ही तेज धूप हो गई गर्मी और उमस से लोग परेशान दिखे। सुबह 8 बजे तक अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दोपहर 2 बजे तक करीब 12 डिग्री तक वृद्धि होने की उम्मीद है। आज अधिकतम तापमान 42 से 44 डिग्री तक पहुंच सकता है। शाम को लोगों को उमस और गर्मी और परेशान कर सकती है। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक, लगातार इसी तरह की गर्मी बढ़ी रहेगी।

संक्षिप्त

RBI ने 2024-25 के लिए मुद्रास्फीति के अनुमान को 4.5 प्रतिशत पर कायम रखा

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने मानसून सामान्य रहने के अनुमान को देखते हुए चालू वित्त वर्ष (2024–25) के लिए मुद्रास्फीति के अनुमान 4.5 प्रतिशत पर बरकरार रखा है। यह पिछले वित्त वर्ष 2023–24 के 5.4 प्रतिशत के अनुमान से कम है। हालांकि, इसके साथ ही केंद्रीय बैंक ने कहा कि खाद्य कीमतों के परिदृश्य पर करीबी नजर रखने की जरूरत है। आरबीआई के गवर्नर शक्तिकांत दास ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी द्विमासिक मौद्रिक समीक्षा पेश करते हुए कहा कि इस वर्ष मानसून की स्थिति को सामान्य मानते हुए चालू वित्त वर्ष के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित मुद्रास्फीति के 4.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है। पहली तिमाही में मुद्रास्फीति के 4.9 प्रतिशत, दूसरी तिमाही में 3.8 प्रतिशत, तीसरी तिमाही में 4.6 प्रतिशत और चौथी तिमाही में 4.5 प्रतिशत रहने की संभावना है। दास ने कहा, ''मुद्रास्फीति को लेकर जोखिम समान रूप से संतुलित हैं।'' केंद्र सरकार ने भारतीय रिजर्व बैंक को उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधरित मुद्रास्फीति को चार प्रतिशत (दो प्रतिशत ऊपर या नीचे) के स्तर पर रखने का लक्ष्य दिया है। दास ने कहा कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति मार्च–अप्रैल में नरम पड़ी है, लेकिन खाद्य मुद्रास्फीति पर लगातार दबाव की वजह से इसका लाभ नहीं मिल पाया है। दालों तथा सब्जियों की मुद्रास्फीति दो अंक में बनी हुई है। गवर्नर ने कहा, ''अत्यधिक गर्मी पड़ने और जलाशयों का स्तर कम रहने से गर्मियों के सीजन की सब्जियों और फलों की कीमतों पर कुछ दबाव पड़ सकता है। दालों तथा सब्जियों की रबी की आवक पर सावधानी से निगाह रखने की जरूरत है।

विदेशी मुद्रा भंडार 651.5 अरब डॉलर के नए उच्चस्तर पर : आरबीआई गवर्नर दास

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर शक्तिकांत दास ने शुक्रवार को कहा कि भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 31 मई तक 651.5 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्चस्तर पर पहुंच गया है। इससे पिछले सप्ताह यानी 24 मई को यह 646.67 अरब डॉलर पर था। इसके बाद से कुल कोष में 4.83 अरब अमेरिकी डॉलर की वृद्धि हुई है। दास ने द्विमासिक नीति समीक्षा की घोषणा करते हुए अपने बयान में कहा, '' एक नई उपलब्धि, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 31 मई को 651.5 अरब

अमेरिकी डॉलर के ऐतिहासिक उच्चस्तर पर पहुंच गया।'' इससे पहले 17 मई को विदेशी मुद्रा भंडार का सर्वकालिक उच्चतम स्तर 648.7 अरब अमेरिकी डॉलर था। विदेशी मुद्रा भंडार को किसी भी बाह्य क्षेत्र की गड़बड़ी को झेलने में अर्थव्यवस्था की समग्र ताकत का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख कारकों में से एक माना जाता है। दास ने कहा कि देश का बाह्य क्षेत्र जुझारू बना हुआ है। चालू खाते का घाटा (कैड), सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में बाह्य ऋण तथा शुद्ध अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति में सुधार का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि प्रमुख बाह्य संकेतकों में सुधार जारी है। उन्होंने कहा, '' कुल मिलाकर हमें अपनी बाह्य वित्तपोषण आवश्यकताओं को आसानी से पूरा करने का विश्वास है।'' गवर्नर ने कहा कि वित्त वर्ष 2024–25 के लिए चालू खाते का घाटा अपने टिकाऊ स्तर के भीतर रहने की संभावना है। उन्होंने प्रेषित धन, सेवा निर्यात और कम व्यापार घाटे से आने वाली मदद का संकेत दिया।

आरबीआई ने लगातार आठवीं बार नहीं किया रेपो दर में बदलाव, ईएमआई में भी नहीं मिली कोई राहत

भारतीय रिजर्व बैंक ने मॉनिटरिंग पॉलिसी कमिटी की बैठक के बाद रेपो रेट में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इस बार भी आरबीआई ने रेपोरेट को 6.5 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखते हुए इसे बरकरार रखने का फैसला किया है। यह निर्णय घरेलू और वैश्विक स्तर पर आर्थिक अनिश्चितताओं की पृष्ठभूमि में लिया गया है। एमपीसी ने छह में से चार सदस्यों की सहमति से बहुमत से निर्णय लिया कि रेपो दर को स्थिर रखा जाए। परिणामस्वरूप, स्थायी जमा सुविधा (एसडीएफ) दर 6.25 प्रतिशत पर बनी हुई है, जबकि सीमांत स्थायी सुविधा (एमएसएफ) दर और बैंक दर 6.75 प्रतिशत पर बनी हुई है। गवर्नर दास ने नीति–पश्चात प्रेस कॉन्फ्रेंस में मौद्रिक नीति के प्रति संतुलित दृष्टिकोण के महत्व पर बल दिया। दास ने मौद्रिक नीति समिति की प्रतिबद्धता दोहराई कि वह धीरे–धीरे समायोजन वापस लेगी, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि मुद्रास्फीति आर्थिक विकास को समर्थन देते हुए लक्षित सीमा के अनुरूप बनी रहे। आरबीआई गवर्नर ने कहा, ''मौद्रिक नीति को अवस्फीतिकारी बने रहना चाहिए तथा मुद्रास्फीति को टिकाऊ आधार पर 4 प्रतिशत के लक्ष्य के अनुरूप लाने की अपनी प्रतिबद्धता में दृढ़ रहना चाहिए तथा मजबूत आधार पर मूल्य स्थिरता को बनाए रखना चाहिए।'' आरबीआई ने चालू वित्त वर्ष 2024–25 के लिए अपने विकास अनुमानों को संशोधित करते हुए जीडीपी विकास दर 7.2 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया। तिमाही वृद्धि अनुमान पहली तिमाही के लिए 7.3 प्रतिशत, दूसरी तिमाही के लिए 7.2 प्रतिशत, तीसरी तिमाही के लिए 7.3 प्रतिशत और चौथी तिमाही के लिए 7.2 प्रतिशत है। गवर्नर दास ने इस बात पर प्रकाश डाला कि वृद्धि परिदृश्य के लिए जोखिम समान रूप से संतुलित हैं।

टी20 वर्ल्ड कप: नींद से जागा आईसीसी, न्यूयॉर्क पिच सुधारने की हो रही कोशिश

इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने माना कि टी20 वर्ल्ड कप 2024 में न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी स्टेडियम की अबतक इस्तेमाल की गई दो पिचें बेहद ही घटिया स्तर की रही हैं। इस वेन्यू पर बाकी के बचे मुकाबलों से पहले इस समस्या का समाधान करने का प्रयास किया जा रहा है।

देर आए दुरुस्त आए.. जी हां ये कहावत आईसीसी पर बिलकुल सटीक बैठती है। दरअसल, इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने माना कि टी20 वर्ल्ड कप 2024 में न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी स्टेडियम की अबतक इस्तेमाल की गई दो पिचें बेहद ही घटिया स्तर की रही हैं। इस वेन्यू पर बाकी के बचे मुकाबलों से पहले इस समस्या का समाधान करने का प्रयास किया जा रहा है। 9 जून यानी रविवार को इसी मैदान पर क्रिकेट जगत की दो चिर परिचित प्रतिद्वंद्वी टीमें भारत और पाकिस्तान टकराएंगी। भारत और आयरलैंड के बीच बुधवार को इसी मैदान में मुकाबला खेला गया। इस मुकाबलें में बल्लेबाजों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। जिसके बाद आईसीसी ने कहा कि नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में अब तक इस्तेमाल की गई पिचें उतनी निरंतरता से नहीं खेली हैं, जितनी हम सभी चाहते थे। विश्व स्तरीय मैदान वाली टीम कल के खेल के समापन के बाद से स्थिति को सुधारने और शेष मैचों के लिए बेहतर प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है।

5 महीने में तैयार हुआ ग्राउंड

बता दें कि, न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी क्रिकेट स्टेडियम को पार्क में बनाया गया है। इसे बनाने में महज 5 महीने का समय लगा है। यहां फ्लोरिडा में बने ड्रॉप इन पिचों का इस्तेमाल हो रहा है। इस स्टेडियम में पहला मैच साउथ अफ्रीका और श्रीलंका के बीच 3 जून को खेला गया था। पिच नंबर–1 पर खेले गए इस मैच में श्रीलंका की टी77 रन पर ही ऑलआउट हो गई थी। साउथ अफ्रीका को टारगेट हासिल करने में भी 16.2 ओवर लग गए थे। 5 जून को भारत और आयरलैंड के बीच पिच नंबर–4 पर हुआ। जहां आयरलैंड की टीम 96 रन पर ही ऑलआउट हो गई थी। भारतीय टीम 8 विकेट से ये मैच जीती, लेकिन कप्तान रोहित शर्मा और ऋषभ पंत को खूब चोट लगी। इस दौरान तो रोहित शर्मा को कंधे में चोट लगने के कारण रिटायर हर्ट होना पड़ा। पिच नंबर 2 और 3 का अभी तक इस्तेमाल नहीं किया गया है। इनमें से एख पिच से घास काट दी गई है।

पाकिस्तान को रौंदकर USA ने लगाई लंबी छलांग, भारत को पछाड़ कर नंबर 1 पर हुआ काबिज

टी20 वर्ल्ड कप 2024 पॉइंट्स टेबल में गुरुवार 6 जून को हुए मुकाबलों में काफी बदलाव देखने को मिला। ग्रुप–ए में

संयुक्त राज्य अमेरिका पाकिस्तान को सुपर ओवर में हराकर टॉप पर काबिज हो गई हैं। वहीं स्कॉटलैंड ने नामीबिया के खिलाफ जीत दर्ज कर ग्रुप–बी में बाजी मारी है। स्कॉटलैंड ने ऑस्ट्रेलिया से नंबर –1 का ताज छीना है। आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2024 पॉइंट्स टेबल में गुरुवार 6 जून को हुए मुकाबलों में काफी बदलाव देखने को मिला। ग्रुप–ए में संयुक्त राज्य अमेरिका पाकिस्तान को सुपर ओवर में हराकर टॉप पर काबिज हो गई हैं। वहीं स्कॉटलैंड ने नामीबिया के खिलाफ जीत दर्ज कर ग्रुप–बी में बाजी मारी है। स्कॉटलैंड ने ऑस्ट्रेलिया से नंबर –1 का ताज छीना है। इसके अलावा ग्रुप–सी में अफगानिस्तान और ग्रुप–डी में साउथ अफ्रीका टॉप पर बना हुआ है। वहीं बता दें कि, ग्रुप ए में भारतीय टीम पहले आयरलैंड को हराकर टॉप पर काबिज थी, लेकिन पाकिस्तान के खिलाफ मिली यूएसए को जीत ने भारत से नंबर 1 की स्थिति छीन ही है। अमेरिका 4 पॉइंट्स के साथ ग्रुप–ए की पॉइंट्स टेबल में टॉप पर है। वहीं भारत 2 अंकों के साथ दूसरे पायदान पर है। ग्रुप में शामिल अन्य तीन टीमें पाकिस्तान, कनाडा और आयरलैंड का अभी खाता तक नहीं खुल पाया है।

अमेरिका को हलके में लेना भारी पड़ा: बाबर आजम

डलास। अमेरिका के हाथों टी20 विश्व कप के पहले मैच में सुपर ओवर में मिली अप्रत्याशित हार से स्तब्ध पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने स्वीकार किया कि विरोधी टीम को हलके में लेना उनकी टीम पर भारी पड़ गया। अमेरिका ने टूर्नामेंट का पहला उलटफेर करते हुए पूर्व चौम्पियन और पिछले उपविजेता पाकिस्तान को सुपर ओवर में हराया। पाकिस्तान को पिछले टी20 विश्व कप में जिम्बाब्वे ने हराया था और हाल ही में बाबर आयरलैंड से हारी है। बाबर ने मैच के टूर्नामेंट में सर्वश्रेष्ठ तैयारी जरूरी होती सहयोगी देशों जैसी टीम के खिलाफ उन्होंने कहा ,'' आप अपनी रणनीति वाली टीम आपको हरा देती है। हमारे लेकिन मैच में हम रणनीति पर अमल निराश हूं। हमने तीनों विभागों में अच्छा ओवर का फायदा नहीं उठाया और गंवाते गए जिससे लय ही नहीं बन सुधार करना होगा।'' उन्होंने गेंदबाजों के बारे में कहा ,'' हम इससे बेहतर कर सकते थे। पहले छह ओवर में हम विकेट ही नहीं ले सके। बीच के ओवरों में स्पिनरों को विकेट नहीं मिलने से हम पर दबाव बना।'' पाकिस्तान को रविवार को चिर प्रतिद्वंद्वी भारत से खेलना है।

आजम की टीम द्विपक्षीय श्रृंखला में बाद प्रेस कांफ्रेंस में कहा ,'' किसी भी है। यह मानसिकता की बात है। आप चीजों को हलके में ले लेते हैं।'' पर अमल नहीं कर पाते और सामने साथ यही हुआ। हमारी तैयारी अच्छी थी नहीं कर सके।'' उन्होंने कहा ,'' मैं प्रदर्शन नहीं किया। हमने पहले छह दसवें ओवर के बाद लगातार विकेट सकी। बल्लेबाजों को अपने प्रदर्शन में

अमेरिका से हार के बाद पाकिस्तानी टीम पर बरसे पूर्व गेंदबाज वसीम अकरम

डलास। महान तेज गेंदबाज वसीम अकरम ने अमेरिका के खिलाफ सुपर ओवर में मिली हार पर पाकिस्तान की जमकर आलोचना करते हुए कहा कि अब टी20 विश्व कप के नॉकआउट चरण में जगह बनाना बाबर आजम की टीम के लिये कठिन होगा। अकरम ने स्टार स्पोर्ट्स से कहा ,'' निराशाजनक प्रदर्शन। हार और जीत खेल का हिस्सा है लेकिन अंतिम गेंद पर लड़ना जरूरी है।पाकिस्तान क्रिकेट के लिये यह बुरा दिन था।'' उन्होंने कहा, ''अब पाकिस्तान को सुपर आठ चरण में जगह बनाने के

लिये जूझना होगा क्योंकि अब उसे भारत (नौ जून) के बाद दो और अच्छी टीमों (आयरलैंड और कनाडा) से खेलना है।'' पाकिस्तान की 1992 विश्व कप जीत के नायक ने कहा कि मैच का निर्णायक मोड़ अमेरिका को शुरूआती विकेट मिलना था। उन्होंने कहा, ''मैच का निर्णायक मोड़ यही था कि अमेरिका ने शुरूआती विकेट चटकाये। पाकिस्तान के लिये बाबर और शादाब ने छोटी सी साझेदारी की लेकिन उनके अलावा कोई नहीं चला। फीलि्डंग बहुत खराब थी। कुल मिलाकर प्रदर्शन अच्छा नहीं था।'' रिवर्स स्विंग के सुल्तान ने कहा, ''मुझे और पाकिस्तान के हर प्रशंसक को यकीन था कि हम अमेरिका को हरायेंगे। लेकिन सुपर ओवर में 18 रन देने के बाद उम्मीदें ध्वस्त हो गई। अमेरिका के कप्तान मोनांक पटेल ने मैच में शानदार बल्लेबाजी की और मोर्चे से अगुवाई की।

एनडीए की संसदीय बैठक होने के साथ ही शेयर बाजार में छाई रौनक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को संसदीय दल की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संसदीय दल के नेता चुने गए है। इस प्रस्ताव का कई नेताओं ने समर्थन किया है। जैसे ही नेताओं का समर्थन प्रधानमंत्री को मिला वैसे ही शेयर बाजार में तूफानी तेजी आई है। इस दौरान सेंसेक्स 1440 अंक ऊपर चढ़ गया। इस दिन सेंसेक्स 76504 पर गया था वहीं निफ्टी 400 अंक ऊपर चढ़ा था और 23,230 पर पहुंच गया था। बैंक निफ्टी इस दौरान एक प्रतिशत ऊपर चढ़ गया। दरअसल जैसे ही टीडीपी अध्यक्ष चंद्रबाबू नायडू ने एनडीए सरकार का समर्थन किया और नरेंद्र मोदी सांसद दल के नेता

चुने गए, इसके बाद ही शेयर बाजार का रुख बिल्कुल बदल गया। शेयर बाजार तेजी से भागने लगा। आंकड़ों के अनुसार शेयर बाजार में तूफानी तेज देखने को मिली और कई शेयर 15 फीसदी तक ऊपर छलांग लगाने में सफल रहे। बीएसई सेंसेक्स के टॉप 30 शेरों में सभी शेयर हरे निशान पर ऊपर की ओर कारोबार कर रहे हैं। इस दौरान विप्रो में भी तेजी देखने को मिली है। विप्रो के शेयर 5: तक ऊपर चढ़े हैं। इंफोसिस, बजाज फाइनेंस, टाटा स्टील के शेयरों में भी तेजी देखने को मिली है। छैम निफ्टी में भी कई शेयर हरे निशान पर कारोबार कर रहे है।

मोदी को पूरा समर्थन

एनडीए के सांसदों की बैठक के दौरान राजनाथ सिंह ने चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार की मौजूदगी में गठबंधन के नेता के तौर पर नरेंद्र मोदी का नाम प्रस्तावित किया। इसके बाद नरेंद्र मोदी को एनडीए का नेता चुन लिया गया। राजनाथ ने कहा कि 1962 के बाद यह पहला मौका होगा जब कोई सरकार लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटी है।

प्याज, टमाटर की कीमतों में उछाल से मई में शाकाहार थाली नौ प्रतिशत महंगी हुई

मुंबई। मई महीने में शाकाहारी थाली की औसत लागत नौ प्रतिशत तक बढ़ गई। बृहस्पतिवार को जारी एक रिपोर्ट में प्याज, टमाटर और आलू की कीमतों में आई तेजी

को इसकी वजह बताया गया। क्रिसिल मार्केट इंटेलिजेंस एंड एनालिसिस की मासिक 'रोटी चावल दर' रिपोर्ट में शाकाहारी थाली महंगी होने की बात कही गई। हालांकि ब्रॉयलर मुर्गे की कीमत में गिरावट से मांसाहारी भोजन की लागत में कमी आई है। रिपोर्ट के अनुसार, शाकाहारी भोजन की कीमत मई में बढ़कर 27.8 रुपये प्रति थाली हो गई, जो एक साल पहले की समान अवधि में 25.5 रुपये थी। वहीं एक महीने पहले अप्रैल में शाकाहारी थाली 27.4 रुपये की थी। इस थाली में मुख्य रूप से रोटी, सब्जियां (प्याज, टमाटर और आलू), चावल, दाल, दही और सलाद शामिल होते हैं। रिपोर्ट में शाकाहारी थाली की कीमत में कुल वृद्धि का कारण टमाटर की कीमतों में 39 प्रतिशत, आलू में 41 प्रतिशत और प्याज में 43 प्रतिशत की वृद्धि को बताया गया है। क्रिसिल की रिपोर्ट के मुताबिक, "रबी की फसल के रकबे में भारी कमी के कारण प्याज की कम आवक तथा पश्चिम बंगाल में फसल खराब होने से आलू की आवक कम होने से इन सब्जियों की कीमतों में बढ़ोतरी हुई।" इसके अलावा चावल और दालों की कीमतों में भी क्रमशः 13 प्रतिशत और 21 प्रतिशत की वृद्धि हुई। हालांकि जीरा, मिर्च और वनस्पति तेल की कीमतों में क्रमशः 37 प्रतिशत, 25 प्रतिशत और आठ प्रतिशत की गिरावट आने से शाकाहारी थाली की लागत में और वृद्धि नहीं देखी गई। इसके उलट मांसाहारी थाली की लागत मई में घटकर 55.9 रुपये रह गई, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 59.9 रुपये थी। यह अप्रैल, 2024 में 56.3 रुपये प्रति थाली की कीमत से भी कम है। मासाहारी थाली में अन्य सभी सामग्री समान होती है, लेकिन दाल की जगह मुर्गे का मांस होता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ब्रॉयलर मुर्गे की कीमतों में 16 प्रतिशत की गिरावट सालाना आधार पर मांसाहारी थाली की लागत में गिरावट का मुख्य कारण है। ब्रॉयलर का मांसाहारी थाली की कुल कीमत में 50 प्रतिशत हिस्सा होता है।

सम्पादकीय.....

गठबंधन के बंधन

हालिया लोकसभा चुनाव के बाद एग्जिट पोल के विपरीत मंगलवार को जो परिणाम सामने आए, उन्होंने राजनीतिक पंडितों को भी चौंकाया है। कहां तो चार सौ पार की बात हो रही थी और कहां तीन सौ पार के भी लाले पड़े। बहरहाल, लगातार दो बार की सरकार के खिलाफ एन्टी इन्कंबेंसी के बावजूद भाजपा का सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरना बहुत बुरा प्रदर्शन नहीं कहा जा सकता। लेकिन पिछले दो लोकसभा चुनाव में भरपूर बहुमत के साथ भाजपा ने जिस तरह राजकाज चलाया, वह पर्याप्त बहुमत के बूते ही संभव था। तभी भाजपा अनेक बदलावकारी फैसले ले पायी। लेकिन हालिया चुनाव परिणामों ने एकबार फिर देश में गठबंधन युग की वापसी कर दी है। पिछली सदी के अंतिम दो दशकों में जिस तरह की राजनीतिक अस्थिरता रही है, उसे देश के हित में तो कदापि नहीं कहा जा सकता। बार–बार के चुनावों से जहां देश पर बड़ा आर्थिक बोझ पड़ता रहा है, वहीं दुनिया में देश की छवि पर प्रतिकूल असर पड़ता रहा। पिछले एक दशक में देश में मजबूत सरकार के चलते अनेक अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत की प्रभावी दखल रही है। जिसकी झलक जी–20 सम्मेलन के सफल आयोजन के रूप में देखी गई। दूसरी ओर राजग सरकार के बड़े ऐतिहासिक व बदलावकारी फैसलों के बाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उस तरह का प्रतिरोध सामने नहीं आ पाया, जैसी कि आशंका थी। इसी तरह भारत के कई मामलों में पाक के तल्ख प्रतिरोध के बावजूद अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी में हम उसे अलग–थलग करने में सफल रहे। लेकिन यह भी हकीकत है कि बड़ा बहुमत सत्ताधीशों को निरंकुश व्यवहार करने का मौका भी देता है। लोकतंत्र की खूबसूरती इस बात में है कि हर छोटे–बड़े विपक्षी राजनीतिक दल की तार्किक बात को सुना जाए। शासन की रीति–नीति में एकतरफा फैसले लेने के बजाय विपक्ष को उसमें शामिल करना एक लोकतांत्रिक देश की जरूरत होती है। सही मायनों में मजबूत विपक्ष किसी देश में एक सचेतक की भूमिका में होता है, बशर्ते बहुमत वाली सरकार उसकी बात को तरजीह दे। बहरहाल, 18वीं लोकसभा चुनाव के परिणामों का एक सत्य यह है कि अब देश का शासन एक गठबंधन सरकार चलाएगी। वैसे अलग–अलग राजनीतिक धरातल पर खड़े विभिन्न दलों की सत्ता व विपक्ष में भागेदारी एक मायने में लोकतंत्र की खूबसूरती है। लेकिन यदि गठबंधन में शामिल दल अल्पमत सरकार को अपनी अनुचित मांगों व राजनीतिक हितों के लिये लगातार दबाव में रखें, तो इसे लोकतंत्र के हित में नहीं कहा जाएगा। बहुत संभव है गठबंधन सरकार में शामिल होने वाले राजनीतिक दल बाहरी तौर पर साथ मिलकर चलने की बात करें और अंदरखाने अपनी मांगों को लेकर सरकार पर निरंतर दबाव बनाये रखें। इसके मूल में रिश्तों में अतीत में आई कड़वाहट की भी भूमिका हो सकती है। लेकिन ऐसे में तालमेल–सुलह ही कारगर साबित होती है। अब यह एक हकीकत है कि मौजूदा जनादेश के मद्देनजर गठबंधन सरकार बनाना सबसे बड़े दल की मजबूरी हो गई है। निश्चित रूप से पूर्ण बहुमत के साथ सहयोगी दलों के साथ सरकार चलाने और अल्पमत में सहयोगी दलों के साथ सरकार चलाने में बड़ा फर्क है। सवाल उठाया जा रहा है कि पूर्ण बहुमत वाले दो कार्यकालों में स्वच्छंद रूप से फैसले लेने वाली भाजपा क्या गठबंधन के सहयोगियों के दबाव के बीच शासन करने में खुद को सहज महसूस कर सकेगी? जिस तरह पिछले कार्यकालों में बड़े बदलावकारी फैसले लिये गए, क्या पार्टी वैसे फैसले अपने तीसरे कार्यकाल में ले पाएगी? क्या भाजपा अपने कोर इश्यू पर सहयोगियों के साथ समझौते की स्थिति में दिख सकती है? आने वाला वक्त बताएगा कि भाजपा अपने बाकी बचे एजेंडे के क्रियान्वयन में किस हद तक सहयोगी दलों के साथ समझौता करेगी। यह भी कि देश के कुछ राज्यों में इस साल होने वाले चुनावों को लेकर क्या भाजपा अपनी रणनीति में कोई बड़ा बदलाव करेगी? अब यह भी देखना होगा कि बड़े जनाधार के साथ लौटा इंडिया गठबंधन संसद में सहयोग–सामंजस्य किस हद तक बनाता है। बहरहाल, राजग सरकार की राह विपक्षी गठबंधन के तेवरों को देखते हुए इतनी आसान भी नहीं रहने वाली है।

लौट रहा है गठबन्धन सरकारों का दौर

एजेंसी

महाराष्ट्र में शिवसेना को दो–फाड़ किया और उसकी सरकार गिरा दी। पंजाब में शिरोमणि अकाली दल से उनकी पटरी नहीं बैठी। 1977 में पहली बार भारत ने जनता पार्टी की गठबन्धन सरकार देखी थी।

10 वर्षों तक भारतीय जनता पार्टी और नरेन्द्र मोदी का एकछत्र शासन, खासकर 2019 से 2024 तक देखने के बाद लगता है कि देश में फिर से गठबन्धन सरकारों के दिन लौट रहे हैं। मोदी के शासन करने के तरीके ने यह सबक देशवासियों को दिया है कि गठबन्धनों से परहेज करना ठीक नहीं है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश के लिये यह व्यवस्था, वह भी वर्तमान परिस्थितियों में सम्भवतरू एक दल के पूर्ण बहुमत वाली सरकार से बेहतर हो सकती है। 18वीं लोकसभा के लिये हुए चुनावों के जो परिणाम आये हैं, उसके बाद यह तो साफ है कि अगली सरकार जो भी बनेगी वह गठबन्धन की होगी। ऐसी सरकारों के बारे में कायम पूर्वाग्रहों और कुछ पैमाने में उनका भारत में जो भी इतिहास रहा हो, अगर वह सब दरकिनार कर दिया जाये तो देशवासियों के हित में यह बुरा सौदा नहीं हो सकता। 2014 में मोदी की अगुवाई में डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में दो कार्यकाल पूरे कर चुकी जिस यूपीए सरकार को हटाया गया था, वह भी एक गठजोड़ ही था। ऐसा गठजोड़ जिसने अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व में चल रही नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस की सरकार को हटाया था। एकछत्र राज करने की चाहत में मोदी ने जहां एक ओर अपने विपक्षी दलों को साफ करने की कोशिश की, तो वहीं अपने सहयोगी दलों को भी समाप्त कर दिया। कुछ दलों को तो तोड़ ही दिया। भाजपा की अति महत्वाकांक्षा और मोदी की एकाधिकार की प्रवृत्ति ने एक सामंजस्यपूर्ण कार्य प्रणाली को ध्वस्त कर दिया। पहली बार (2014–19) तो उन्होंने सहयोगी दलों के सदस्यों का थोड़ा बहुत सम्मान किया और उन्हें सत्ता में भागीदारी दी परन्तु दूसरे कार्यकाल में जब उन्हें अपने दम पर पूर्ण बहुमत मिल गया तो उन्होंने उन दलों को न केवल दरकिनार किया वरन उनकी जमीनें हथियाने की भी कोशिश की। महाराष्ट्र में शिवसेना को दो–फाड़ किया और उसकी सरकार गिरा दी। पंजाब में शिरोमणि अकाली दल से उनकी पटरी नहीं बैठी। 1977 में पहली बार भारत ने जनता पार्टी की गठबन्धन सरकार देखी थी। मोरारजी देसाई उसके प्रधानमंत्री बने थे। यह सरकार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाई। मध्यावधि चुनाव हुए और 1980 में इंदिरा गांधी सत्ता में लौटीं। इसके पहले कुछ समय के लिये कांग्रेस के समर्थन से चौधरी चरण सिंह की सरकार भी बनी लेकिन वह लम्बा चलने में असफल रही थी। इसके कारण गठबन्धन सरकारों को लेकर लोगों के मन में आशंका बैठ गयी। मान लिया गया कि ऐसी सरकारें टिकाऊ नहीं होतीं। हालांकि इसकी दूसरी वजहें थीं, पर विरोधी दलों के लिये यह जुमला चल पड़ा कि शडिवाइडेड दे स्टैंड, यूनाइटेड दे फॉल (विभाजित रहते वे मजबूत होते हैं, इकठ्ठे धराशायी)। 1989 में एक और अवसर आया जब 400 पार वाली परन्तु बोफोर्स के कारण बदनाम हुई राजीव गांधी की मजबूत सरकार को उसी में वित्त मंत्री व रक्षा मंत्री रहे वीपी सिंह के नवगठित जनता दल ने परास्त किया था। हालांकि उस चुनाव में सर्वाधिक सीटें कांग्रेस को ही आई थीं लेकिन 1984 के मुकाबले काफी कम थीं। इसे राजीव ने अपनी नैतिक पराजय माना था और सरकार बनाने से इंकार कर दिया था। वी पी सिंह आगे बढ़े थे। उन्हें भाजपा के साथ कुछ प्रगतिशील दलों ने समर्थन दिया था। मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने के चलते भाजपा द्वारा समर्थन खींच लेने से यह सरकार भी गिर गयी तथा कुछ समय के लिये चंद्रशेखर पीएम बने। वह कांग्रेस के समर्थन से चले पर राजीव के बंगले की हरियाणा पुलिस के दो कांस्टेबलों द्वारा जासूसी कराये जाने के आरोप में कांग्रेस ने समर्थन वापस ले लिया था। इंद्रकुमार गुजराल एवं एच डी देवेगौड़ा जैसों द्वारा भी गठबन्धन सरकारें चलाने का इतिहास इसी देश का है। पहली बार वाजपेयी सरकार ने 1999 से 2004 तक का कार्यकाल पूरा किया था जो कि मिली–जुली सरकार थी। हालांकि इसके पहले वे एक बार 13 दिन और दूसरी बार 13 माह की गठबन्धन सरकारें चला चुके थे। इसकी मुख्य विशेषता यह थी कि सरकार उनकी दो बार गिरी लेकिन गठबन्धन अटूट रहा। सहयोगी दल साथ बने रहे। इसने यह लोकतांत्रिक प्रशिक्षण दिया कि पराजय में बिखरना नहीं है और मिलकर सरकार बनाने के प्रयास करते रहने हैं। वाजपेयी भी वैसे ही कट्टर हिन्दू और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उतने ही समर्पित कार्यकर्ता थे जितने कि नरेन्द्र मोदी। जब तक वे सरकार चलाते रहे उन्होंने अपनी विचारधारा को एक किनारे रख दिया था। उन्होंने अपने साथ जॉर्ज फर्नांडीज, नीतीश कुमार, शरद यादव जैसे समाजवादियों को भी रखा, पाकिस्तान की यात्रा की और जिस गोधरा कांड में बड़ी संख्या में मुस्लिम मारे गये व बलात्कार हुए थे, उसके होने पर इन्हीं मोदी को राजधर्म का पालन करने की सरेआम नसीहत भी दी, जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे। मनमोहन सिंह के कार्यकाल में भी यह मिथक टूटा कि गठबन्धन सरकारें काम नहीं करतीं। ग्रामीण गरीबी दूर करने के लिये मनरेगा, भोजन का अधिकार, सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार जैसे नायाब कार्यक्रम इसी गठबन्धन सरकार की सौगातें हैं। सो, ऐसे वक्त में जब पूर्ण बहुमत के अभाव में कोई भी अपने दम पर सरकार नहीं बना सकता, साफ है कि सत्ता मिल–जुलकर ही चलाई जा सकती है। वैसे भी लोकतंत्र का मतलब है मिलकर काम करना। मोदी को सामंजस्यपूर्ण तरीके से काम करने की आदत नहीं। उन्हें गठबन्धन की संस्कृति सीखनी आवश्यक तो है, लेकिन वाजपेयी और मनमोहन सिंह सदृश्य लचीलेपन व उदारता के अभाव में उनके हाथों में पड़कर ऐसी सरकार वाकई में अस्थिर हो सकती है।

लोकसभा चुनावों में एनडीए जीता, लेकिन नरेंद्र मोदी नेतृत्व हारा

नित्य चक्रवर्ती

इंडिया ब्लॉक 2024 के चुनावों में सत्ता के दरवाजे के काफी करीब था। 2024 एक और 2004 हो सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ है। यह एक वास्तविकता है। इंडिया ब्लॉक के नेताओं को स्थिति का ईमानदारी से आकलन करने और रणनीति बनाने के लिए अभी मिलना चाहिए। अब उनका मुख्य काम ब्लॉक सदस्यों की एकता को मजबूत करना है ताकि भाजपा का मुकाबला किया जा सके। 2024 के लोकसभा चुनावों में लोकतंत्र सबसे बड़ा विजेता है, क्योंकि 4 जून को घोषित परिणाम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के राजनीतिक विचारों में विविधता को रेखांकित करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जो सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा के एकमात्र चेहरे जिनके नाम पर चुनाव लड़ा गया, को इस साल 19 अप्रैल से 1 जून तक सात चरणों में हुए 18वें लोकसभा चुनावों में अपने मताधिकार का प्रयोग करने वाले 64.2 करोड़ मतदाताओं से सबसे बड़ी हार मिली है। प्रधानमंत्री ने पिछले दो महीनों में एनडीए के लिए अपनी पार्टी के नारे श्अबकी बार 400 पारश्य के समर्थन में लगातार प्रचार किया, जिसमें से भाजपा का लक्ष्य 370 था। पूरे देश में यह प्रचार किया गया कि भाजपा 4 जून के नतीजों के जरिये इसे हासिल कर लेगी। अंतिम स्थिति यह है –एनडीए को 292 तथा भाजपा को 240सीटें मिली हैं जो 2019 के लोकसभा स्तर से 63 सीटें कम हैं। यह 2014 की 282सीटों से भी 42 सीटें कम है। इसके मुकाबले इंडिया ब्लॉक 233 सीटों के साथ एनडीए से केवल 59 सीटें पीछे है। प्रधानमंत्री ने देश को सांप्रदायिक आधार पर ध्रुवीकृत करने की कोशिश की थी। उन्होंने केंद्र और राज्यों में एक ही पार्टी को रखने के नारे के साथ कांग्रेस और क्षेत्रीय दलों पर भी तीखे हमले किये। चुनाव परिणामों में क्षेत्रीय दलों के पुनरुत्थान ने इस बात की गारंटी दी है कि संघवाद को खत्म करके सभी शक्तियों को केंद्रीकृत करने का भाजपा का उद्देश्य सफल नहीं होगा। आने वाले दिन नयी सरकार के लिए मुश्किल भरे होंगे, जिसका नेतृत्व अल्पमत वाली भाजपा की सरकार करेगी। परन्तु 2024 के लोकसभा नतीजों से क्या निष्कर्ष निकलेंगे? सबसे पहले तो नरेंद्र मोदी का कद कम हुआ है। वह खुद को विश्वगुरु और एक तरह के मसीहा के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहे थे, जो यह दर्शाता था कि वह भी अजेय हैं। उन्हें भगवान ने 2047 तक अपना काम करने के लिए भेजा है। वह अपने समर्थकों और आम लोगों के बीच मिथक फैलाने के लिए चुनावों में भाजपा के भारी बहुमत पर निर्भर थे। यह पूरी तरह से गलत साबित हुआ है। नरेंद्र मोदी अब एक सामान्य राजनेता बन गये हैं, जो सरकार बनाने में अपने एनडीए सहयोगियों के भारी दबाव में होंगे। भाजपा के आगे के हिंदुत्व के कार्यक्रम को झटका लगा है। भाजपा की सीटों में गिरावट और लोकसभा में अल्पमत में आने से संघ परिवार में उथल–पुथल मचेगी। प्रधानमंत्री और पार्टी में उनके करीबी सहयोगियों ने हाल के महीनों में चुनाव रणनीति के संबंध में एकतरफा कार्रवाई की, जिससे आरएसएस और संघ परिवार की अन्य इकाइयां नाराज हैं। प्रधानमंत्री को इन हिंदुत्ववादी ताकतों के गुस्से का सामना करना पड़ेगा, जो नरेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में अपने एजेंडे को पूरा करने का इंतजार कर रहे थे। मोदी उनकी नजर में विफल हो गये हैं। दूसरी बात यह है कि हिंदी भाषी राज्यों में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा है। जहां तक उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा का सवाल है, भगवा खेमे के लिए यह विनाशकारी था। पार्टी ने मध्य प्रदेश में पूर्ण बहुमत बरकरार रखा है, लेकिन ऐसा राज्य में कांग्रेस के कमजोर नेतृत्व और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के भाजपा में शामिल होने के पैंतरे के बाद हुआ है। मध्य प्रदेश में पूरा संगठन गड़बड़ा गया। कांग्रेस के सक्षम नेतृत्व में पार्टी राज्य में बेहतर प्रदर्शन कर सकती थी। हिंदी भाषी राज्य भाजपा की मुख्य ताकत हैं और इसे पार्टी की मुख्य ताकत माना जाता है, क्योंकि यह क्षेत्र उसके हिंदुत्व के आधार से जुड़ा है। अग्रणी राज्य उत्तर प्रदेश में पार्टी के पतन से निश्चित रूप से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित भाजपा के शीर्ष नेताओं के बीच पुनर्विचार की स्थिति पैदा होगी। योगी का भविष्य दांव पर है, क्योंकि वे उत्तर प्रदेश में अभियान चलाने वाले भाजपा के मुख्य नेता थे। अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश में बड़ा उलटफेर किया है और खास बात यह है कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस–सपा गठबंधन कामयाब रहा है। आने वाले दिनों में इसे और आगे बढ़ाना होगा, क्योंकि राज्य में 2027 में विधानसभा चुनाव होने हैं। तीसरी बात यह है कि राहुल गांधी एक मजबूत नेता के रूप में उभरे हैं, जिन्हें लोगों से अधिक स्वीकार्यता मिल रही है। राहुल ने कांग्रेस के अभियान की कमान बहुत अच्छे से संभाली है। वे हिंदुत्व, बेरोजगारी, महंगाई समेत मुख्य मुद्दों पर प्रधानमंत्री और भाजपा पर लगातार हमला करते रहे हैं। दरअसल, राहुल ने एक ऐसे नेता की परिपक्वता दिखाई है, जो गठबंधन सहयोगियों से निपट सकता है। कांग्रेस ने 2024 के चुनावों में अपनी लोकसभा सीटों को लगभग दोगुना कर लिया है, लेकिन 18वीं लोकसभा चुनाव के नतीजों से मिले सबक के आधार पर आगे की कार्रवाई आने वाले दिनों में पार्टी को अच्छा लाभ दे सकती है। खामियां जगजाहिर हैं, कांग्रेस नेतृत्व द्वारा सुधारात्मक कार्रवाई के लिए उनका ध्यान रखा जा सकता है। देश की 139 साल पुरानी पार्टी कांग्रेस खुद को इंडिया ब्लॉक के प्रभावी संचालक के रूप में काम करने के लिए तैयार कर सकती है। इंडिया ब्लॉक ने कई राज्यों में अच्छा प्रदर्शन किया है। यह घटक दलों के जमीनी कार्यकर्ताओं की समन्वित कार्रवाई से संभव हुआ है। इसके जरिए कई युवा नेता उभरकर सामने आये हैं। राहुल गांधी के अलावा अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, आदित्य ठाकरे, उदयनिधि स्टालिन, कल्पना सोरेन और अभिषेक बनर्जी ऐसे युवा नेता हैं, जिनके आने वाले दिनों में इंडिया ब्लॉक की अगुआई करने की उम्मीद है। उद्धव ठाकरे और एम के स्टालिन दोनों ने दिखाया है कि कैसे संयुक्त नेतृत्व भाजपा और एनडीए को बड़ा झटका दे सकता है। आने वाले दिनों में अशांत राजनीतिक स्थिति से निपटने के लिए इंडिया ब्लॉक को सभी स्तरों पर मजबूत करना होगा। चौथा सबक दक्षिणी राज्यों में बदलते राजनीतिक मूड का है। आंध्र प्रदेश में ऐसा लगता है कि टीडीपी–भाजपा गठबंधन जगन मोहन रेड्डी की वाईएसआरसीपी सरकार की जगह लेगा। टीडीपी ने बड़ी वापसी की है। तमिलनाडु और केरल में भाजपा ने अपनी उपस्थिति में मामूली सुधार किया है। कर्नाटक में कांग्रेस ने 2019 के चुनावों की तुलना में अपनी टैली में सुधार किया, लेकिन भाजपा–जेडी (एस) गठबंधन प्रभावी रहा। तेलंगाना में, भाजपा और कांग्रेस दोनों ने क्षेत्रीय पार्टी बीआरएस की कीमत पर लाभ कमाया। फिर से ओडिशा में, क्षेत्रीय बीजेडी को चुनावों में भाजपा ने हरा दिया। यह भाजपा के हाथों एक क्षेत्रीय पार्टी की हार थी जो अप्रत्याशित नहीं थी। इस तरह, क्षेत्रीय दलों के बारे में भी कोई सीधी रेखा नहीं है। टीडीपी को बहुत लाभ हुआ है जबकि वाईएसआरसीपी, बीआरएस और बीजेडी को नुकसान हुआ है। फिर भी, कुल मिलाकर, क्षेत्रीय दलों ने कई राज्यों में बढ़त हासिल की है और यह इंडिया ब्लॉक की संघीय राजनीति को मजबूत करने के लिए बहुत सकारात्मक है। 18वें लोकसभा चुनाव में एनडीए का वोट शेयर 46प्रतिशत रहा, जो 2019 के आंकड़े से 2 प्रतिशत कम है जबकि 2024 के चुनावों में इंडिया ब्लॉक का वोट शेयर 41प्रतिशत था, जो 8प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करता है। भाजपा के वोटों में यह गिरावट अभियान के अंतिम दिनों में नरेंद्र मोदी की स्थिति में कमी से जुड़ी है। क्षेत्रीय दलों में, पश्चिम बंगाल में, तृणमूल कांग्रेस ने 2019 की अपनी टैली 22 में 7 सीटें जोड़ी है। टीएमसी ने 2024 के चुनावों में 4प्रतिशत की वृद्धि के साथ अपना वोट शेयर 47प्रतिशत तक बढ़ाया, जबकि भाजपा का वोट शेयर 3प्रतिशत घटकर 37प्रतिशत रह गया। टीएमसी सरकार पर तमाम आरोपों के बावजूद टीएमसी ने भाजपा और कांग्रेस–वाम गठबंधन को हराकर अपनी स्थिति में काफी सुधार किया है।

जनता का डंका बज गया

सर्वमित्रा सुरजन

नरेन्द्र मोदी का हमेशा दावा रहा है कि दुनिया में उनका डंका बजता है। लेकिन 4 जून को जब 18वीं लोकसभा के नतीजे आए तो नरेन्द्र मोदी देश तक में अपने नाम का डंका नहीं बजवा पाए। जबकि भाजपा ने पूरा चुनाव मोदी नाम के इर्द–गिर्द ही लड़ा। वाराणसी में ले–देकर नरेन्द्र मोदी अपनी सीट बचा पाए। दो बार का प्रधानमंत्री होने के बावजूद वे आसान जीत नहीं दर्ज कर पाए, ना ही बड़े अंतर से सीट जीती। महज डेढ़ लाख वोट का अंतर हार और जीत का रहा। उनसे अधिक वोट राहुल गांधी रायबरेली में ले आए, जबकि स्मृति ईरानी और नरेन्द्र मोदी राहुल गांधी को वायनाड और रायबरेली दोनों से भगाने का दावा करते रहे। खैर, नरेन्द्र मोदी ने राहुल गांधी ही नहीं भारतीय जनता को समझने में भी भूल की। उन्हें लगा होगा कि वे एक तरफ निम्न स्तर के भाषणों से विपक्ष पर प्रहार करते रहेंगे और दूसरी तरफ विभिन्न वेषभूषाओं में पूजा–पाठ करते दिखेंगे तो जनता इससे प्रभावित होगी। यहीं वे चूक कर गए, क्योंकि इस देश की आम जनता के पास वो पैनी नजर है जिससे वो असलियत और दिखावे का फर्क कर लेती है। पांच किलो अनाज लेने के लिए लाइनों में खड़े 85 करोड़ लोगों की जेबें बेशक खाली रहीं, लेकिन सामान्य समझ भरी–पूरी रही। जिससे वे समझ गए कि उन्हें इस तरह लाइनों में खड़ा करने का जिम्मेदार कौन है। क्यों उनके जवान बच्चे काम पर नहीं जाते, लेकिन धार्मिक जुलूसों या कांवड़ यात्रा का हिस्सा बनते हैं और बाकी खाली वक्त में बेरोजगारी की कुंठा और तनाव से गुजरते हैं। जो सरकार हजारों करोड़ का भव्य मंदिर बनवा सकती है, जो बिना जरूरत के सेंट्रल विस्टा का निर्माण करती है, वो रोजगार देने वाले उद्यमों को खड़ा क्यों नहीं करती। जय जवान और जय किसान वाले इस देश में जवानों और किसानों की दुर्दशा किन कारणों से हुई, ऐसे कई सवालों का जवाब जनता ने बीते वर्षो में खुद से तलाश कर लिया था। इसलिए इस बार उसने ऐसा जनादेश दिया कि फिर कोई नेता यह बड़बोलापन न कर सके कि एक अकेला सब पर भारी है। लोकतंत्र में एक अकेले के लिए न कभी कोई जगह थी, न रहेगी, ये बड़ा संदेश इन चुनावों में जनता ने दे दिया। पाठकों को भाजपा का घोषणापत्र याद होगा ही, जिसमें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा से कहीं ज्यादा तस्वीरें नरेन्द्र मोदी की थीं और जनता से किए वादों को मोदी की गारंटी के नाम से ही पेश किया गया। चुनावों में सबसे अधिक प्रचार भी नरेन्द्र मोदी ने ही किया। कई महीनों से वे दिल्ली में अपने प्रधानमंत्री कार्यालय में कम और चुनाव क्षेत्रों में ज्यादा नजर आए। 15 अगस्त 2023 को लालकिले की प्राचीर से उन्होंने ऐलान कर दिया था कि तीसरी बार भी मैं ही झंडा फहराने आऊंगा। यह सीधे–सीधे भारतीय जनता के विवेक और लोकतांत्रिक अधिकारों को चुनौती थी कि तुम्हारी मर्जी अब मायने नहीं रखती, केवल मेरे मन की बात का महत्व है। इसके बाद 5 फरवरी 2024 को संसद में प्रधानमंत्री मोदी ने ऐलान कर दिया कि एनडीए को 4 सौ के ऊपर और अकेले भाजपा को 370 सीटें मिलेंगी। यह दावा देश के मिजाज भांपने के दम पर किया गया था। चुनाव प्रक्रिया शुरु हुई नहीं थी कि नरेन्द्र मोदी ने यह बताना शुरु कर दिया कि कितने देश उन्हें अभी से जून के बाद होने वाले कार्यक्रमों के लिए बतौर प्रधानमंत्री न्यौता दे रहे हैं। अर्थात न केवल उन्हें बल्कि दुनिया को भी यकीन है कि आएगा तो मोदी ही। जी हां, यही नारा भाजपा में मोदी समर्थकों की जुबां पर हमेशा रहा है। ये नारा अपने आप में खासा अलोकतांत्रिक है। लेकिन जिनके सरोकारों में लोकतंत्र दूर–दूर तक न हो, उनसे क्या अपेक्षा की जा सकती है। इस देश को लोकतंत्र और संविधान बचाने की सारी अपेक्षाएं विपक्ष से ही थीं। क्योंकि देश ने यह मंजर भी देख लिया कि कैसे एक के बाद एक करते–करते सौ से अधिक सांसदों को संसद से निलंबित कर दिया गया। किस तरह संसद के नए भवन के भीतर धुआं फैलाने की घटना हो गई। जिसे हमला ही कहा जाना चाहिए, क्योंकि इसमें जान–माल की हानि तो नहीं हुई, लेकिन संसद की मर्यादा पर वार तो किया ही गया था। विपक्ष इस मुद्दे पर सरकार से जवाब मांगता रह गया, मगर जैसे पुराने सारे सवाल संसद की दीवारों से टकराकर लौट गए, वैसा ही इस मुद्दे पर भी हुआ। देश देख रहा था कि पिछले दस सालों में संसद लोकतंत्र का मंच नहीं रह गया, मन की बात करने का अड्डा बन गया है। जहां कई बड़े फैसले, महत्वपूर्ण विधेयक बिना किसी चर्चा के केवल बहुमत के दम पर पारित कर लिए गए। पुरानी संसद में, आजादी के बाद जब देश निर्माण के साथ–साथ संविधान निर्माण का काम हो रहा था तो एक–एक धारा, अनुच्छेद, बिंदु पर गंभीर विमर्श होते थे, भारत के विविधताओं से भरे संसार को सहेजने की कोशिश होती थी ताकि हर किसी का आत्मगौरव और सम्मान कायम रहे, भले ही वह अल्पसंख्यक हो या बहुसंख्यक। पिछले दस बरसों में इसी संविधान को धता बताने का काम शुरु हो गया। आम भारतीय की भावनाओं, अधिकारों और हितों से मानो सरकार का कोई लेना–देना ही नहीं रहा। जिस फैसले से सत्ता मजबूत हो, उद्योगपति मित्रो का हित साधन हो, बस वही फैसले लिए जाते रहे। इस नकारात्मकता से भरे माहौल में वह भारत बेहद तेजी से खत्म होता जा रहा था, जिसके बारे में अल्लामा इकबाल ने कहा था कि कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौर–ए–जमां हमारा। इस माहौल के बारे में राहुल गांधी ने अपनी पहली भारत जोड़ो यात्रा में देश को सचेत किया। नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान, जैसी बात महज नारा नहीं था, अपने आप में पूरा दर्शन था, जिसमें भारत की हस्ती को न मिटने देने का संकल्प था। इस संकल्प में देश की जनता ने राहुल गांधी का साथ दिया, उसके साथ–साथ विपक्ष के कई दलों ने अपना समर्थन दिया। नतीजा यह रहा कि इंडिया गठबंधन एक मजबूत विकल्प के तौर पर सियासी मंच पर उभर गया। जो लोग मोदी नहीं तो कौन जैसा बेमानी सवाल उठाते रहे, उन्हें सटीक जवाब मिल गया कि हर बार मोदी ही हों, यह बिल्कुल भी जरूरी नहीं है।

`कल्कि 2898 एडी' पर आया बड़ा अपडेट, इस दिन रिलीज होगा फिल्म का ट्रेलर

> मेकर्स ने हाल ही में प्रभास का एक पोस्टर शेयर किया है, जिसमें वो पहाड़ के ऊपर खड़े नजर आ रहे हैं। इस पोस्टर को शेयर करते हुए मेकर्स ने लिखा है-नई दुनिया इंतजार कर रही है। कल्कि २८९८ एडी का ट्रेलर १० जून को रिलीज होगा।' अब मेकर्स के इस अनाउंसमेंट के बाद फैंस काफी एक्साइटेड हो गए हैं। अब हर कोई १० जून का इंतजार करने लगा है।

नाग अश्विन के निर्देशन में बनी साइंस–फिक्शन फिल्म 'कल्कि 2898 एडी' लंबे सम से चर्चा में है। प्रभास स्टारर इस मूवी का फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फिल्म से स्टार्स के बीते दिनों में कई लुक भी सामने आ चुके हैं, जिसने फैंस के बीच फिल्म के लिए और एक्साइटमेंट बढ़ा दी। वहीं मेकर्स ने हाल ही में फिल्म के ट्रेलर की रिलीज डेट का भी एलान कर दिया है, जिसके बाद से लोगों में इसे लेकर क्रेज और बढ़ गया है। मेकर्स ने हाल ही में प्रभास का एक पोस्टर शेयर किया है, जिसमें वो पहाड़ के ऊपर खड़े नजर आ रहे हैं। इस पोस्टर को शेयर करते हुए मेकर्स ने लिखा है–नई दुनिया इंतजार कर रही है। कल्कि 2898 एडी का ट्रेलर 10 जून को रिलीज होगा।' अब मेकर्स के इस अनाउंसमेंट के बाद फैंस काफी एक्साइटेड हो गए हैं। अब हर कोई 10 जून का इंतजार करने लगा है। जाहिर है जिस तरह से इस फिल्म के टीजर ने दर्शकों का दिल जीता। ठीक उसी तरह कल्कि का ट्रेलर भी लोगों के बीच धमाल मचाने में कामयाब रहेगा। बता दें कि 'कल्कि 2898 एडी' फिल्म की रिलीज डेट को लेकर कई महीनों से खबरें चल रही हैं लेकिन इस पर फाइनल अपडेट आखिरकार बीते दिनों आ गया। मेकर्स ने एक नए पोस्टर के साथ फिल्म की रिलीज डेट की घोषणा कि, और बताया कि ये फिल्म 27 जून, 2024 को रिलीज होगी।बता दें कि 'कल्कि 2898' को नाग अश्विन डायरेक्ट कर रहे हैं। फिल्म की कहानी को लेकर कहा जा रहा है कि ये कलयुग के विनाश पर बेस्ड होगी क्योंकि पुराणों के मुताबिक कलयुग में धर्म स्थापना करने के लिए कल्कि नाम का अवतार जन्म लेगा और दुनिया में फैल रहे अधर्म का विनाश करेगा। इस फिल्म की चर्चा काफी समय से हो रही है क्योंकि इसमे साउथ और बॉलीवु के कई दिग्गज स्टार्स नजर आने वाले हैं। जिसमें दीपिका पादुकोण, कमल हासन, प्रभास, दिशा पाटनी के नाम शामिल हैं। फिल्म में जहां अमिताभ बच्चन द्रोण के पुत्र 'अश्वत्थामा' के किरदार में दिखेंगे, तो वहीं प्रभास फिल्म में भैरव की भूमिका निभाएंगे, जिसे कल्कि का बदला हुआ अहंकार माना जाता है। फैंस अब इस फिल्म को देखने के लिए काफी एक्साइटेड हैं।

बंगाल राशन घोटाला मामले में अभिनेत्री रितुपर्णा सेनगुप्ता को ईडी ने फिर भेजा समन

प्रवर्तन निदेशालय ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल में राशन घोटाला मामले में पूछताछ के लिए लोकप्रिय अभिनेत्री रितुपर्णा सेनगुप्ता को एक नया समन भेजा है। नए समन में सेनगुप्ता को अगले हफ्ते कोलकाता के साल्ट लेक स्थित ईडी दफ्तर में आने को कहा गया है। उन्हें बुधवार को ईडी की पूछताछ में उपस्थित होना था। लेकिन इसके बदले उन्होंने केंद्रीय एजेंसी को एक लेटर भेजा जिसमें उन्होंने कहा कि वो देश से बाहर हैं, इसलिए व्यक्तिगत रूप से पेश नहीं हो सकते। हालांकि, लेटर में उन्होंने कहा कि वो जांच में पूरा सहयोग करने को तैयार हैं। उन्होंने ईडी को पूछताछ के लिए कोई बाद की तारीख बताने को कहा। सूत्रों ने बताया कि अभिनेत्री से पत्र मिलने के बाद ईडी अधिकारियों ने उन्हें पूछताछ के लिए उचित समय देने का फैसला किया। सूत्रों ने बताया कि सेनगुप्ता का नाम उस समय सामने आया जब ईडी अधिकारी राशन घोटाला मामले में एक आरोपी से जुड़े दस्तावेजों की जांच कर रहे थे। रितुपर्णा सेनगुप्ता से जांच के दौरान घोटाला में सामने आए कुछ लेन–देन में संबंध ा को स्पष्ट करने के लिए कहा जाएगा।इससे पहले 2019 में सेनगुप्ता को पश्चिम बंगाल में रोज वैली चिटफंड घोटाले में ईडी अधिकारियों ने तलब किया था। उन्हें रोज वैली समूह की कुछ फिल्म प्रोजेक्ट में शामिल होने के लिए तलब किया गया था। आरोप लगाया गया था कि ये फिल्में रोज वैली द्वारा मार्केटिंग के जरिए निवेशकों को आकर्षक रिटर्न का वादा कर जुटाए गए फंड का इस्तेमाल कर बनाई गई थीं।

कंगना रनौत

ने थप्पड़ विवाद पर बॉलीवुड सेलेब्स की चुप्पी पर निशाना साधा

अभिनेत्री से राजनेता बनीं कंगना रनौत इस समय चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर अपने साथ हुई थप्पड़ घटना को लेकर चर्चा में हैं। अभिनेत्री को कथित तौर पर एयरपोर्ट पर सुरक्षा जांच के दौरान बैथ अधिकारी ने थप्पड़ मारा था, जब वह छक। की बैठक में भाग लेने के लिए नई दिल्ली जा रही थीं। शुक्रवार को उन्होंने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर स्टोरीज सेक्शन में एक पोस्ट शेयर की, जिसमें उन्होंने इस घटना पर चुप्पी साधने के लिए बॉलीवुड सेलेब्स की आलोचना की। हालांकि, अब कंगना ने वह पोस्ट डिलीट कर दी है, जिसमें लिखा था, ''प्रिय फिल्म इंडस्ट्री, आप सभी एयरपोर्ट पर मुझ पर हुए हमले पर या तो जश्न मना रहे हैं या पूरी तरह से चुप हैं। याद रखें कि अगर कल आप अपने देश की किसी सड़क पर या दुनिया में कहीं और निहत्थे चल रहे हों और कोई इजरायली/फिलिस्तीनी आपको या आपके बच्चों को सिर्फ इसलिए पीट दे क्योंकि आपने राफा की ओर आंख उठाने की कोशिश की या इजरायली बंधक के लिए खड़े हुए... तो आप देखेंगे कि मैं आपकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार के लिए लड़ूंगी, अगर किसी दिन आपको आश्चर्य होगा कि मैं वहां क्यों हूं, तो याद रखें। तुम मैं नहीं हो।'' इससे पहले, कंगना की बहन रंगोली चंदेल ने भी अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर लिखा, ष्खालिस्तानियों की बस यही औकात है तुम लोगों की... पीछे से प्लान करना और अटैक करना...लेकिन मेरी बहन की रीढ़ स्टील की बनी है...वह खुद ही इससे निपटने जा रही है...लेकिन पंजाब तेरा क्या होगा रुकिसानों का विरोध खालिस्तानी अड्डा था...एक बार फिर साबित हुआ!! यह गंभीर सुरक्षा खतरा था...इसे शीर्ष स्तर पर ले जाने की जरूरत है!! एक अन्य स्टोरी में उन्होंने लिखा, ''सस्पेंड करने से इसको फराक नहीं पड़ेगा...मोटी रकम आ गई होगी खालिस्तानियों से...रिमांड पर लेना पड़ेगा इसको... '' घटना के बाद, कंगना ने प्लेटफॉर्म पर एक वीडियो भी पोस्ट किया जिसमें बताया गया कि एयरपोर्ट पर वास्तव में क्या हुआ था। वीडियो में, उन्हें यह कहते हुए सुना जा सकता है, श्नमस्ते, दोस्तों! मुझे मीडिया और मेरे शुभचिंतकों से कई फोन कॉल आ रहे हैं। सबसे पहले मैं सुरक्षित हूँ और मैं पूरी तरह से ठीक हूँ ठीक है। चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर आज जो दुर्घटना हुई, वह सुरक्षा जांच के दौरान हुई। जैसे ही मैं आगे बढ़ा, दूसरे केबिन में बैथ सुरक्षा गार्ड ने मेरे पास से गुजरने का इंतजार किया और फिर उसने मेरे चेहरे पर मारा। उसने मुझे गाली भी दी। जब मैंने उससे पूछा कि उसने मुझे क्यों मारा तो उसने कहा कि वह किसान आंदोलन की समर्थक है। मैं सुरक्षित हूं लेकिन मेरी चिंता यह है कि हम पंजाब में आतंकवाद और उग्रवाद के उदय को कैसे संभालेंगे।'' इस बीच, कंगना ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के टिकट पर हिमाचल प्रदेश की मंडी सीट से लोकसभा चुनाव 2024 जीता। उन्हें लोकसभा चुनाव में 537,022 वोट मिले, जबकि कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार विक्रमादित्य सिंह को 462,267 वोट मिले।

10.29 की आखिरी दस्तक में अपने रोल पर राजवीर सिंह ने कहा मैं अपने किरदार की तरह लॉजिक नहीं लगाता

अपकमिंग सुपरनैचुरल थ्रिलर 10.29 की आखिरी दस्तक काफी चर्चाओं में है। शो में एक्टर राजवीर सिंह पुलिस इंस्पेक्टर की भूमिका निभा रहे हैं। अपने रोल के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि वह अपने किरदार की तरह लॉजिक नहीं लगाते हैं। राजवीर कुर्बान हुआ और रज्जो जैसे शो का हिस्सा रहे हैं। उन्होंने कहा, मेरा किरदार अभिमन्यु प्रैक्टिकल पुलिस इंस्पेक्टर है, जो किसी भी तरह की सुपरनैचुरल चीजों में विश्वास नहीं करता। उसे जल्दी गुस्सा आता है और कई चीजों को लेकर उसका नजरिया बेहद अलग है। वह किसी पर भरोसा नहीं करता और सबको शक की नजरों से देखता है। उन्होंने आगे कहा, वहीं दूसरी ओर, मैं अपने किरदार की तरह लॉजिक नहीं लगाता। मेरे परिवार के साथ मेरा हमेशा इमोशनल रिश्ता रहा है, इसलिए मैं पूरी तरह से प्रैक्टिकल नहीं हूं। लेकिन बाहरी दुनिया के लिए, मैं अपने किरदार की तरह ही काफी इंट्रोवर्ट हूं, यानी बोलने से ज्यादा दूसरों को सुनता हूं और ऑब्जर्व करता हूं। राजवीर ने आगे कहा, अभिमन्यु एक ऐसा किरदार है जो किसी भी तरह के अंधविश्वास को नहीं मानता। असल जिंदगी में मेरा मानना है कि एनर्जी होती है, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि वे वैसी ही हैं जैसी हम फिल्मों में देखते हैं। इसलिए, मेरे किरदार के कुछ हिस्से असल जिंदगी में मेरे साथ मेल खाते हैं।

अजय देवगन ने पूरी की `रेड 2' की शूटिंग, वाणी कपूर और रितेश देशमुख अहम रोल में

अजय देवगन फिल्म रेड की सीक्वल रेड 2 की घोषणा होते ही फिल्म ने काफी चर्चा बटोरी थी। फिलहाल इस फिल्म को 15 नवंबर को प्रदर्शित किए जाने की योजना है। यह साल 2018 में आई रेड का सीक्वल है। इसमें अजय देवनग आयकर विभाग के वरिष्ठ अधिकारी के रूप में नजर आने वाले हैं।अजय के साथ वाणी कपूर और रितेश देशमुख इस फिल्म की शूटिंग जनवरी में मुंबई से शुरू हुई थी। फिल्म 'रेड 2' को लेकर फैंस काफी ज्यादा उत्साहित हैं। लगातार हो रही चर्चाओं के बीच इस फिल्म पर बड़ी जानकारी सामने आई है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार फिल्म की शूटिंग पूरी हो चुकी हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि सभी कलाकारों ने पिछले महीने यानी 10 मई को ही इस क्राइम थ्रिलर की शूटिंग पूरी कर ली थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फिल्म का पहला शेड्यूल मुंबई में अजय और अभिनेता रितेश देशमुख के साथ फिल्माया गया था। उसके बाद फिल्म की टीम ने करीब एक महीने तक लखनऊ में शूटिंग की। फिल्म के तीसरे शेड्यूल में टीम राजस्थान पहुंची। जहां खिमसर के रेत के टीलों, मेहरानगढ़ किले और जोधपुर के अन्य भागों में शूटिंग की गई। फिल्म का निर्देशन राज कुमार गुप्ता कर रहे हैं। अजय के साथ वाणी कपूर और रितेश देशमुख इस फिल्म की शूटिंग जनवरी में मुंबई से शुरू हुई थी। आपको बता दें रिपोर्ट से पता लगा कि, 'रेड 2' का पोस्ट–प्रोडक्शन जारी है। फिल्म में अजय देवगन सीनियर इनकम टैक्स ऑफिसर का किरदार निभा रहे हैं वहीं फिल्म की कहानी उत्तर प्रदेश के एक रियल लाइफ रेड केस से इंस्पार्यड है। इसमें यूपी के एक राजनेता–बिजनेसमैन पर 100 करोड़ रुपये से ज्यादा की चोरी का आरोप लगाया गया था। फिल्म को इस साल के आखिर तक रिलीज करने की योजना बनाई जा रही है।

हार्ट बर्न की समस्या से राहत पाने के लिए अपनाएं ये घरेलू नुस्खे, झटपट मिलेगा आराम

गर्मियों के मौसम में अक्सर सीने में जलन होने लगती है। यह पाचन तंत्र से जुड़ी समस्या है। गलत खानपान के कारण सीने में जलन होने लगती है। इसको हार्ट बर्न या एसिड रिफलक्स भी कहा जाता है। वहीं इसके लिए कई तरह की दवाईयां भी आपको मार्केट में मिल जाएंगी। लेकिन अगर आप इस समस्या से घरेलू तरीके से निजात पाना चाहते हैं। तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसे उपायों के बारे में बताने जा रहे हैं। जिनको अपनाने से आप सीने में जलन और बेचौनी की समस्या से राहत पा सकते हैं। एप्पल साइडर विनेगर या सेब का सिरका सीने के जलन को कम करने में मददगार है। इसके लिए आप दो छोटे चम्मच एप्पल साइड विनेगर को एक गिसाल पानी में मिलाकर पिएं। इससे एसिडिटी की समस्या दूर होती है। साथ ही इस घरेलू नुस्खे को करने से वेट भी कंट्रोल में रहता है।

लौंग

सीने में जलन की समस्या होने पर लौंग चूसना भी काफी मददगार साबित हो सकता है। अगर आपका खाया–पिया आसानी से नहीं पचता है, तो लौंग के सेवन से आपको लाभ मिल सकता है। साथ ही यह मुंह से आने वाली बदबू से भी छुटकारा दिलाने में सहायक होती है।

अजवाइन

सीने की जलन को दूर करने में अजवाइन भी फायदेमंद होती है। इस समस्या से राहत पाने के लिए रात को एक गिलास पानी में अजवाइन भिगोकर रख दें। फिर अगले दिन सुबह खाली पेट इस पानी का सेवन करें। या फिर आप चाहें तो इसका काढ़ा बनाकर भी पी सकते हैं। इससे आपका पाचन सही रहेगा और हार्ट बर्न की समस्या से भी राहत मिलेगी।

एलोवेरा जूस

एलोवेरा जूस अपच, गैस और एसिडिटी से निजात दिलाने में सहायक होता है। आप इसके पल्प का जूस बनाकर पी सकते हैं। एलोवेरो जूस का सेवन करने से मेटाबॉलिज्म रेट भी बेहतर होता है।

छाछ पिएं

हार्ट बर्न की समस्या से राहत पाने के लिए आप छांछ का भी सेवन कर सकते हैं। छांछ में मौजूद एसिडिक तत्व अपच, गैस और एसिडिटी से राहत दिलाने का काम करते हैं। वहीं गर्मी के मौसम में छांछ का सेवन करने से पेट ठंडा रहता है।

गर्मियों में जमकर करें आम के जूस का सेवन, सेहत को मिलेंगे ये जबरदस्त फायदे

गर्मियों में हर दिन आम का जूस पीने से इसके भरपूर पोषक तत्वों की वजह से कई स्वास्थ्य लाभ मिल सकते हैं। ए, सी और ई जैसे आवश्यक विटामिन से भरपूर, आम का जूस प्रतिरक्षा को बढ़ाता है, स्वस्थ त्वचा को बढ़ावा देता है और पाचन में सहायता करता है। इसकी उच्च एंटीऑक्सीडेंट सामग्री ऑक्सीडेटिव तनाव से निपटने में मदद करती है, जबकि प्राकृतिक शर्करा आपको गर्म महीनों के दौरान तरोताजा और हाइड्रेटेड रखने के लिए त्वरित ऊर्जा बढ़ावा देती है। विटामिन और खनिजों से भरपूर– आम के जूस में विटामिन सी की मात्रा अधिक होती है, जो प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देता है, आयरन के अवशोषण में मदद करता है, स्वस्थ त्वचा को बढ़ावा देता है और एंटीऑक्सीडेंट के रूप में कार्य करता है। आम के जूस में मौजूद विटामिन ए अच्छी दृष्टि, स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली और हृदय, फेफड़े और गुर्दे के समुचित कामकाज के लिए आवश्यक है। इसमें मौजूद पोटैशियम रक्तचाप को नियंत्रित करने में मदद करता है, मांसपेशियों के कार्य का समर्थन करता है और फ्लूइड संतुलन बनाए रखता है। आम के जूस में बीटा–कैरोटीन जैसे एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो हानिकारक मुक्त कणों को बेअसर करने, ऑक्सीडेटिव तनाव और कैंसर और हृदय रोग जैसी पुरानी बीमारियों के जोखिम को कम करने में मदद कर सकते हैं।

पाचन स्वास्थ्य– आम के जूस में एमाइलेज जैसे एंजाइम होते हैं जो कार्बोहाइड्रेट को तोड़ने और पचाने में सहायता करते हैं। इसमें मौजूद फाइबर नियमित मल त्याग को बढ़ावा देने और कब्ज को रोकने में मदद कर सकता है।

हाइड्रेशन– आम का जूस हाइड्रेशन का एक अच्छा स्रोत है, खासकर गर्म मौसम के दौरान या व्यायाम के बाद। हाइड्रेटेड रहना समग्र स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें शरीर का तापमान बनाए रखना, जोड़ों में चिकनाई और पोषक तत्वों का परिवहन शामिल है।

त्वचा का स्वास्थ्य– आम के जूस में मौजूद विटामिन ए और सी कोलेजन उत्पादन को बढ़ावा देकर और सूरज की क्षति से बचाकर स्वस्थ त्वचा में योगदान करते हैं।

हृदय का स्वास्थ्य– आम के जूस में मौजूद पोटेशियम और एंटीऑक्सीडेंट रक्तचाप को कम करने, सूजन को कम करने और समग्र हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं।

ऊर्जा को बढ़ावा– आम के जूस में मौजूद प्राकृतिक शर्करा ऊर्जा का एक त्वरित स्रोत प्रदान करती है, जो इसे दोपहर के समय के लिए एक अच्छा विकल्प बनाती है।

हड्डी का स्वास्थ्य– आम के जूस में थोड़ी मात्रा में कैल्शियम और मैग्नीशियम होता है, जो स्वस्थ हड्डियों को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। बता दें कि आम का जूस इन लाभों को प्रदान करता है, लेकिन इसकी प्राकृतिक चीनी सामग्री के कारण इसे संयमित रूप से पीना महत्वपूर्ण है। मीठे पेय पदार्थों का अधिक सेवन वजन बढ़ाने और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है।

गर्भवती महिलाओं को नहीं खाने चाहिए ये आहार, बढ़ जाता है मिसकैरेज का खतरा

सेहत का ध्यान रखना हमारी अच्छी लाइफ के लिए बेहद जरुरी होता है, खासतौर से जब कोई महिला गर्भवती होती है। ऐसे में ये समय माँ और बच्चे के लिए बेहद नाजुक होता है। इसलिए खानपान का ख्याल रखने की सलाह दी जाती है। कई महिलाओं को लेकिन ये जानकारी नहीं होती है के कौन सी चीज उनके लिए अच्छी है और कौन सी नुकसानदायक। हम आपको आज इन्हीं कुछ चीजों के बारे में बताने जा रहे हैं जिसे भूलकर भी आपको खाने से बचना चाहिए। तो चलिए अब जानते हैं–

पपीता है खतरनाक

प्रेगनेंसी के दौरान पपीते का सेवन नहीं करना चाहिए, खासकर कच्चा पपीता या इसकी सब्जी तो बिल्कुल नहीं खाना चाहिए क्योंकि पपीते में मौजूद कुछ तत्व गर्भाशय में संकुचन पैदा कर सकते हैं, जिससे परेशानी हो सकती है। इसलिए गर्भवती हैं, तो पपीता न खाएं।

करेला है हानिकारक

प्रेगनेंसी में करेले का ज्यादा सेवन करने से आपको प्रेगनेंसी के दौरान परेशानियां उठानी पड़ सकती है करेले में क्विनीन, ग्लाइकोसाइड, मोमोर्डिका जैसे कई तत्व होते हैं जो शरीर में जाने के बाद हल्का जहरीला प्रभाव छोड़ सकते हैं जिसके कारण आपको यह सभी परेशानियां हो सकती है जैसेरू थकान होना, पेट में दर्द, थूक ज्यादा बनना, शरीर में दर्द, धुंधला दिखाई देना आदि अगर करेला खा भी रही है तो थोड़ी ही मात्रा में खाएं।

बैंगन को कहें ना

प्रेगनेंट महिलाओं को बैंगन से दूर रहना चाहिए। वैसे तो बैंगन में पोषक तत्वों की मात्रा अच्छी होती है। बैंगन को काफी हेल्दी सब्जी माना जाता है क्योंकि यह फाइबर का भी अच्छा स्त्रोत है। लेकिन प्रेगनेंसी के दौरान बैंगन का सेवन आपको कम ही करना चाहिए या हो सके तो इसका सेवन ना ही करे। क्योंकि बैंगन में साइट हार्मोन होते हैं जो पीरियड लाने में मदद करते हैं, जिसके कारण प्रेगनेंसी में बैंगन खाना महिला के लिए बहुत बुरा होता है।

पत्तागोभी भी हो सकती है नुकसानदेह

पत्तेदार सब्जियों को कीड़े बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं जिसके कारण अक्सर इन्हें उगाने में ढेर सारे कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है। कुछ कीटनाशक तो इतने खतरनाक होते हैं कि इनके पत्तों को धोने और पकाने के बाद भी उन पर लगे केमिकल्स का असर नहीं जाता है। सामान्य स्थिति में तो शरीर को इसके ज्यादा दुष्प्रभाव नहीं होते, लेकिन प्रेगनेंसी में ऐसी पत्ता गोभी नुकसानदायक हो सकती है। इसके अलावा प्रेग्नेंट महिला को बरसात के मौसम में तो किसी भी तरह की पत्तेदार सब्जी और पत्तागोभी का सेवन नहीं करना चाहिए।

कटहल की तासीर होती है गर्म

प्रेगनेंसी के दौरान आप कटहल का सेवन कर सकती हैं लेकिन बहुत ही सीमित मात्रा में इसका सेवन करें। इसका अधिक मात्रा में सेवन करना आपकी प्रेगनेंसी के लिए हानिकारक भी हो सकता है। कटहल अधिक खाने से आपको कब्ज हो सकती है। साथ ही इसमें बहुत अधिक शुगर होने की वजह से भी यह उन गर्भवती महिलाओं के लिए नुकसानदायक है जिन्हें शुगर की समस्या है क्योंकि इससे आपकी शुगर बढ़ सकती है।

कच्ची सब्जियों को ना करें शामिल

गर्भवती महिलाओं को पाश्चुरीकृत नहीं की हुई सब्जी नहीं खानी चाहिए। आप जब भी सब्जी और फलों का सेवन करते है तो उसके पहले उन्हें अच्छे से धो लें इससे आप संक्रमण के खतरे से बच जाएंगे।

खाने में नखरेबाजी करते हैं बच्चे, तो यह तरीके अपनाने से झटपट खाली हो जाएगी थाली

अक्सर माता–पिता को इस बात की चिंता लगी रहती है कि उनके बच्चे ठीक से खाना नहीं खाते। अगर उन्हें प्रयाप्त पोषण नहीं मिलेगा तो उनके अच्छे से विकास कैसे मिलेगा। बहुत सी माएं दिन–रात बच्चों के पीछे खाना लेकर घुमती रहती हैं, कई बार तो जबरदस्ती करके बच्चे के मुंह में खान डाल दिया जाता है, इससे वह और भी ज्यादा चिढ़ जाते हैं। अगर आपके बच्चे भी खाने को लेकर नखरे करते हैं तो पहले जानिए इसके कारण, इसके बाद ढूंढे इसका इलाज।

इस कारण खाने से भागते हैं बच्चे

डॉक्टरों का कहना है कि पहले साल में बच्चे तेजी से बढ़ते हैं, लेकिन उसके बाद उनका विकास धीमा हो जाता है और वे कम खाने लगते हैं। इस पीरियड में भूख में कमी आना नॉर्मल होता है। कई बार गले में खराश, डायरिया, सिरदर्द, बुखार होने के कारण भी बच्चे का खाना खाने का मन नहीं करता। हालांकि कुछ समय बाद बच्चे की डाइट अच्छी हो जाती है।

कब्ज के कारण भी होती है परेशानी

कुछ दवाओं जैसे एंटीबायोटिक्स लेने से भी भूख प्रभावित हो सकती है। साथ ही कब्ज होने पर भी बच्चे को पेट फूल जाता है एसे में उन्हें खाने की इच्छा नहीं होती है। दांत निकलने के समय मसूड़ों के आसपास इर्रिटेशन, खुजली, दर्द होने से भी बच्चा खाना नहीं चाहता. उसे खीझ, चिड़चिड़पन महसूस होता है।

बच्चे को डांटने– मारने की बजाय इस तरीके से खिलाएं खाना

ना पूरी करें डिमांड

हर बार बच्चे की डिमांड पर खाना ना बनाएं। इससे बच्चे की आदत बिगड़ेगी और वह कुछ भी नई चीज खाना नहीं सीख पाएगा।

टाइम टेबल करें सेट

कोशिश करें कि बच्चे को रोजाना एक ही समय पर खाना परोसें। इससे ये उसकी हैबिट में आ जाएगा और खाने को देखते ही उसे भूख लग जाएगी।

फोन और टीवी को करें दूर

खाने के समने बच्चे को फोन और टीवी को दूर कर दें। उसे सिर्फ खाने पर ही फोकस करने दें। इससे वे अगर कम भी खाएंगे तो भी उनके शरीर को लगेगा।

ना करें जबरदस्ती

आप बच्च्चे को खाना खाने के लिए जबरदस्ती न करें। ऐसा करने से वह खाने से पूरी तरह मन चुरा सकता है।

खाने को एन्जॉय करने दें

बच्चे को हर रोज कुछ कलरफुल और अलग–अलग शेप में फूड आइटम्स सर्व करे। इससे वह खाने को एन्जॉय करेंगे।

खाने की जगह न दें दूध

अक्सर देखा जाता है कि जब बच्चा खाना नहीं खाता तो उसका पेट भरने के लिए दूध दे दिया जाता है। बच्चा भी आसानी से इसे पी जाता है, दूध को भोजन के विकल्प के तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। दूध बच्चे को पोषक तत्व जैसे कि कैल्शियम व प्रोटीन आदि प्रदान तो करता है पर इससे बच्चे की भूख कम हो जाती है और वह खाने से बचने लगते हैं। इसलिए कोशिश करें कि खाने की जगह खाना और दूध की जगह दूध ही पिलाएं।

प्रियंका चोपड़ा की तरह पाएं खिली-खिली त्वचा, डी-टैन मास्क से गोरी होगी स्किन

ग्लोबल स्टार प्रियंका चोपड़ा की तरह आप भी चाहते हैं खिली–खिली स्किन, तो गर्मी के मौसम उनके द्वारा बताए गए डी–टैन मास्क का इस्तेमाल कर शुरु कर दें। यहां देखिए मास्क बनाने का तरीका–

भीषण गर्मी में स्किन पर टैनिंग की समस्या का होना कॉमन है। दरअसल, तेज धूप की वजह से त्वचा काली होने होने लगती है। क्या कभी आपने सोचा है कि, दिनभर धूप में रहने वाले एक्टर्स की स्किन काली क्यों नहीं होती है? क्योंकि यह सभी स्किन केयर रुटीन फॉलो करते हैं। एक्ट्रेस प्रियंका चोपड़ा स्किन से टैनिंग को दूर करन के लिए घर पर ही डी टैन मास्क का इस्तेमाल करती हैं। अगर आप केमिकल युक्त ब्यूटी प्रोडक्ट यूज नहीं करना चाहती हैं, तो प्रियंका चोपड़ा की तरह डी टैन मास्क बनाकर लगाएं।

डी टैन पैक बनाने के लिए सामग्री

– 2 बड़े चम्मच बेसन
– 2 बड़ा चम्मच दही
– 1 बड़ा चम्मच दूध
– आधा चम्मच चंदन पाउडर
– आधा नींबू का रस
– 2 चुटकी हल्दी

कैसे बनाएं डी टैन पैक

इस डी टैन पैक को बनाने के लिए एक कटोरी लें। फिर इसमें बेसन और दही डालकर अच्छे से मिक्स कर दें। फिर इसमें नींबू का रस और दूध मिक्स करें। जब ये अच्छे से मिक्स हो जाए तो पेस्ट में चंदन पाउडर और हल्दी डालकर अच्छे से मिक्स कर दें। प्रियंका चोपड़ा के बताए तरीके से डी– टेन स्क्रब तैयार है।

कैसे चेहरे पर लगाएं

इस डी–टैन पैक को तैयार करने के बाद इसे अपनी टैन स्किन पर लगाएं और थोड़ी देर तक सूखने दें। जब ये सूख जाए तो पेस्ट को हाथों से रब करके स्क्रब करें। फिर पानी से अच्छी तरह से साफ करें। हफ्ते में 2–3 बार इस्तेमाल करें।

नोएडा इकाई की काव्य गोष्ठी संपन्न

नोएडा सशहर समता नोएडा इकाई की काव्यगोष्ठी दिनांक 6/6/2024 को सम्पन्न हुई । शहर समता विचार मंच नोएडा इकाई की महिला काव्य गोष्ठी प्रवीणा त्रिवेदी ष्प्रज्ञाष् के संयोजन में एवं आ० अरुण त्रिवेदी ष्अनुपमष् की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई ।इस काव्यगोष्ठी की मुख्य अतिथि रचना सक्सेना जी एवं विशिष्ट अतिथि मनोरमा श्रीवास्तव जी रही।

यह काव्य गोष्ठी 5 बजे से 6.बजे तक चली जिसका शुभारंभ अध्यक्षता कर रहे अरुण त्रिवेदी ष्अनुपमष् द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती की मूर्ति पर माल्यार्पण द्वारा किया गया। सरस्वती वंदना की सुंदर प्रस्तुति अर्चना कोहली द्वारा की गयी। काव्य गोष्ठी का कुशल संचालन ममता जोशी ने किया। इस काव्य गोष्ठी में अरुण त्रिवेदी ष्अनुपमष् , अनीता सिंह ष्अनुष , डॉ अल्पना ,प्रवीणा त्रिवेदी ष्प्रज्ञाष्,अवंतिका व ममता जोशी ने अपनी सुंदर रचनाओं की प्रस्तुति द्वारा आयोजन में चार चाँद लगा दिये। सभी की प्रस्तुति शानदार रही। गजलों और कविताओं का सुंदर गुलदस्ता शहर समता नोएडा इकाई द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसकी महक अगली काव्यगोष्ठी तक हम सबको सुगन्धित करती रहेगी।अंत में धन्यवाद ज्ञापन अनीता सिंह ष्अनुष के द्वारा किया गया।

बागी विधायकों की सदस्यता खत्म करायेगी सपा

स्पीकर को जल्दी लिखा जा सकता है पत्र

लखनऊ, एजेंसी। समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव चुनाव के वक्त सपा से बगावत करने वाले विधायकों की घर वापसी के मूड में नहीं। पार्टी उनकी सदस्यता खत्म कराने की तैयारी में है। जल्द यूपी विधानसभा अध्यक्ष को पत्र भेजा जाएगा। सपा के बागी विधायकों में मनोज पांडेय, अभय सिंह, पूजा पाल, राकेश पांडेय, राकेश प्रताप सिंह, विनोद चतुर्वेदी व आशुतोष मौर्य शामिल हैं। राज्यसभा चुनाव में भाजपा के पक्ष में क्रासवोटिंग की। लोकसभा चुनाव के दौरान कुछ विधायक तो भाजपा में शामिल हो गए। जब नतीजे आए तो भाजपा के साथ बागी विधायकों को भी झटका लगा क्योंकि भाजपा को उम्मीद के मुताबिक वोट नहीं दिलवा पाए। इन विधायकों की घर वापसी की चर्चा शुरू हुई तो अखिलेश यादव ने सिरे से नकार दिया है। इन बागी विधायकों में पल्लवी पटेल भी है। पूर्व विधायक नारद राय ने ऐन वक्त बलिया में भाजपा का दामन थाम लिया। बावजूद इसके सपा ने बलिया सीट जीती।अब अखिलेश किसी को वापस लेने के मूड में नहीं है। सपा प्रवक्ता फखरूल हसन चांद ने एक्स पर लिखा, राज्यसभा चुनाव के समय सपा से धोखा देने वाले गद्दार विधायक परिणाम आने के बाद से अखिलेश यादव को माफी देने का संदेश भेज रहे है कि एक बार माफ कर दीजिए एक मौका दीजिए ! कुछ कघ्घीबियों से पैरवी कर माफी माँगने के लिये समय दिलवाने की गुजारिश कर रहे है !उन्होंने लिखा कि अखिलेश यादव ने गद्दार विधायकों से मिलने से इंकार किया और पैरोकार को सुनाई खरी–खरी !

लोगों ने और समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने तानाशाही को हराने का काम किया है : शिवपाल यादव

लखनऊ, एजेंसी। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने लोकसभा चुनाव के नतीजों को लेकर मीडिया से बात करते हुए कहा कि चुनाव में चुनौतियां तो थी क्योंकि भाजपा बहुत अहंकार में थी। अहंकार के साथ भाजपा विपक्ष को खत्म करना चाहती थी। उन्होंने कहा कि सपा–कांग्रेस के लोगों के खिलाफ झूठी रिपोर्ट तैयार कर उन्हें जेल भेजना चाहती थी, लेकिन अब भाजपा का अहंकार टूटा है।

पत्रकार आशुतोष की हत्या की सीबीआई जाँच की मांग को लेकर के पी ट्रस्ट ने दिया ज्ञापन

दिवगंत पत्रकार की हत्या की सीबीआई जाँच हो पीडित परिवार को अविलम्ब सुरक्षा मुहैया कराए प्रदेश सरकार : डॉ0 सुशील कुमार सिन्हा अध्यक्ष के पी ट्रस्ट

देशभर के पीडित कायस्थ के साथ रहेगा ट्रस्ट : कुमार नारायण वरिष्ठ उपाध्यक्ष

प्रयागराज । पत्रकार आशुतोष श्रीवास्तव के हत्या से आक्रोशित कायस्थ समाज ने आज कायस्थ पाठशाला के अध्यक्ष डॉ0 सुशील सिन्हा के नेतृत्व मे जिला अधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ मुख्यमंत्री उ प्र सरकार को ज्ञापन देकर कायस्थ परिवार की ओर से जौनपुर के दिवगंत पत्रकार आशुतोष श्रीवास्तव की बीच बाजार दुरूसाहसिक तरीके से हत्या के सीबीआई जाँच की माँग को लेकर जिलाअधिकारी कार्यालय पर मुख्यमंत्री को

सम्बोधित ज्ञापन एडीएम मदन कुमार को सौपा गया। उत्तर प्रदेश सरकार से आशुतोष श्रीवास्तव की हत्या की सीबीआई जांच कि माँग एवं पीडित परिवार की सुरक्षा कि माँग करता है। के पी ट्रस्ट अध्यक्ष डॉ सुशील सिन्हा ने कहाँ कि ट्रस्ट कायस्थ परिवार पर हो रहे अत्याचार पर चुप नही बैठेगा ट्रस्ट देशभर मे कही भी किसी कायस्थ के साथ अन्याय होने पर पीडित कायस्थ को न्याय मिलने तक ट्रस्ट पीडित कायस्थ के साथ संघर्ष करेगा अध्यक्ष डॉ सिन्हा ने कहा 13 मई 2024 को सोमवार को जौनपुर के पत्रकार आशुतोष श्रीवास्तव की दिन दहाडेध् गोली मार कर हत्या कर दी गयी थी पत्रकार आशुतोष श्रीवास्तव शाहगंज थाना क्षेत्र के सबरहद गाँव के रहने वाले थे। बदमाशों द्वारा ताबड़तोड गोलियां मार कर उनकी हत्या कर दी गयी।ध् प्रदेश सरकार दूारा सीबीआई जाँच कराने से हत्या के साजिशकर्ता समेत सभी अपराध्ी पुलिस की गिरफ्त मे होगे डॉ सिन्हा ने कहा कि पत्रकार आशुतोष के परिवार को अविलम्ब सुरक्षा मुहैया कराई जाए । वही वरिष्ठ उपाध्यक्ष कुमार नारायण ने कहा कि दिवगंत पत्रकार आशुतोष की हत्या की जाँच प्रदेश सरकार सीबीआई से कराए यह मांग करता हूँ वही पत्रकार आशुतोष के परिवार को अविलम्ब सुरक्षा उपलब्ध कराए ट्रस्ट आशुतोष के न्याय मिलने तक संघर्ष जारी रखेगा । बहुत जल्द ही के पी ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ सुशील सिन्हा के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मंडल जौनपुर जा कर दिवगंत पत्रकार आशुतोष के परिवार से मिलेगा । कार्यक्रम में कायस्थ समाज के सैकडों की संख्या में लोग रहे। ज्ञापन देने वालो में वरिष्ठ उपाध्यक्ष कुमार नारायण , महामंत्री वीर कृष्ण श्रीवास्तव , गोपी कृष्ण श्रीवास्तव , सुमित श्रीवास्तव , आभा मधुर , सत्य शील सहाय , गौरव सिन्हा , यशार्थ श्रीवास्तव,अरूण श्रीवास्तव , अरविन्द श्रीवास्तव , रारंग श्रीवास्तव , रतन खरे , शिव नारायण , विपिन श्रीवास्तव , पंकज श्रीवास्तव , प्रदीप श्रीवास्तव , राजा मुन्ना , राकेश श्रीवास्तव , हरीश श्रीवास्तव , मीनू श्रीवास्तव , पार्थ श्रीवास्तव शुभम श्रीवास्तव आदि आदि लोग रहे।

ममता और उद्धव को अभी सरकार बनाने के विकल्प की तलाश

अखिलेश यादव को मिली बड़ी जिम्मेदारी

लखनऊ, एजेंसी। इंडिया गठबंधन ने फैसला किया है वह सरकार बनाने का प्रयास नहीं करेगा। लेकिन गठबंधन में शामिल कुछ लीडर विकल्प तलाश रहे हैं। विशेष रूप से टीएमसी और शिवसेना यूबीटी और आम आदमी पार्टी, भाजपा को मात देने के लिए गठबंधन में दलों की संख्या बढ़ाने के विकल्प तलाशने पर जोर दे रही है।सूत्रों के मुताबिक पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी ने चुनाव नतीजों के दिन ही एसपी नेता अखिलेश यादव से बात की थी और उनसे टीडीपी के एन चंद्रबाबू नायडू तक पहुंचने के लिए कहा था। कल गुरुवार को ममता

बनर्जी के भतीजे और टीएमसी के नेता अभिषेक बनर्जी और सांसद डेरेक ओ ब्रायन ने नई दिल्ली में अखिलेश यादव से मुलाकात की। सूत्रों ने कहा कि आप का भी मानना घ्है कि इंडिया ब्लॉक में और अधिक पार्टियों को लाने के विकल्प तलाशे जाने चाहिए। आप नेता संजय सिंह और राघव चड्ढा ने ममता बनर्जी से मुलाकात की। दोनों नेता अलग–अलग शिवसेना नेता संजय राउत के आवास पर भी गए। अभिषेक बनर्जी और डेरेक ओ ब्रायन मुंबई भी गए हैं जहां शिवसेना यूबीटी प्रमुख उद्धव ठाकरे और उनके बेटे आदित्य ठाकरे से मिलेंगे। टीएमसी नेताओं से मुलाकात के बाद अखिलेश ने कहा, लोकतंत्र में उम्मीदें हमेशा बढ़नी चाहिए। "खुश करने से सरकार बन रही है, तो खुश कोई और कर सकता है। आशा और अपेक्षाएं कभी खत्म नहीं होनी चाहिए। आशा और उम्मीदें हमेशा बनी रहनी चाहिए।" सपा के सूत्रों ने कहा कि अखिलेश यादव को चंद्रबाबू नायडू या नीतीश कुमार के इतनी जल्दी पाला बदलने की उम्मीद नहीं है, लेकिन वे टीएमसी नेताओं से सहमत हैं। कांग्रेस आक्रामक रूप से संख्या बल जुटाने के मूड में नहीं है क्योंकि इंडिया गुट दावा करने की स्थिति में नहीं। वामपंथी नेताओं का मानना है कि दावेदारी के लिए एक अलग गठबंधन बनाने का प्रयास इस समय सही नहीं।

लोकसभा चुनाव : जातीय आधार पर बंटे थे चुनाव में टिकट

- 80 सांसदों में जातिवार आंकड़ा आया
- सामने,बीजेपी से सबसे ज्यादा चुनकर आए सवर्ण सांसद
- सपा के ज्यादा जीते ओबीसी सांसद, कुर्मी का बढ़ा दबदबा
- यूपी में 35 ओबीसी सांसद जीते

लखनऊ, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के लोकसभा चुनाव 2024 में बीजेपी नेतृत्व वाले एनडीए पर कांग्रेस के अगुवाई वाला इंडिया गठबंधन भारी पड़ा।सूबे में सभी दलों ने सियासी बिसात बिछाई थी और जातीय आधार पर टिकट बंटवारे किए थे।सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने अपने पीडीए यानि पिछड़ा–दलित–अल्पसंख्यक फॉर्मूले वाले दांव से एनडीए को चितकर दिया। बीजेपी की सारी सोशल इंजीनियरिंग फ्लॉप हो गई। कांग्रेस का साथ व सपा का पीडीए वाला दांव इंडिया गठबंधन के लिए हिट तो ओबीसी समुदाय के लिए सुपरहिट रहा।बीजेपी ने लोकसभा चुनाव में सवर्ण वर्ग पर ज्यादा भरोसा जताया। सपा ने गैर यादव ओबीसी और दलित प्रत्याशियों पर विश्वास जताया।यूपी में बीजेपी से सवर्ण सांसद सबसे ज्यादा चुनकर आए हैं तो सपा से ओबीसी सांसद जीतने में सफल रहे हैं।दलित सांसद एनडीए से ज्यादा इंडिया गठबंधन से जीतने में कामयाब रहे हैं।उत्तर प्रदेश में ठाकुर सांसदों की संख्या घटी तो ब्राह्मण सांसदों ने अपने नंबर को बनाए रखा है। पांच मुस्लिम लोकसभा सांसद जीतने में सफल रहे हैं, लेकिन पिछली बार से कम हुए हैं लेकिन दलित सांसदों की संख्या बढ़ गई है। उत्तर प्रदेश की 80 में 35 ओबीसी सांसद चुनकर आए, जिनमें सबसे ज्यादा 22 सांसद इंडिया गठबंधन से जीते हैं और 13 सांसद एनडीए से जीते हैं। इस बार 23 सवर्ण सांसद यूपी से चुने गए हैं, जिनमें 15 एनडीए से जीते हैं तो 8 इंडिया गठबंधन चुने गए हैं। सवर्ण जातियों के सबसे ज्यादा ब्राह्मण जीते हैं तो ओबीसी जातियों में कुर्मी सांसद जीतने में सफल रहे हैं।दलितों में पासी समुदाय के सांसद सबसे ज्यादा चुने गए हैं जबकि जाटवों की संख्या घटी है।2024 के लोकसभा चुनाव में 35 ओबीसी समुदाय के सांसद चुने गए हैं, जिनमें ज्यादा इंडिया गठबंधन से है। बीजेपी नेतृत्व वाले एनडीए से 13 ओबीसी सांसद बने हैं तो इंडिया गठबंधन से 23 चुने गए। एनडीए में 10 बीजेपी से जीते हैं जबकि सहयोगी आरएलडी के दोनों सांसद ओबीसी हैं। अपना दल एस से चुनी अनुप्रिया पटेल ओबीसी हैं। इंडिया गठबंधन में 22 ओबीसी लोकसभा सांसद सपा से चुने गए हैं जबकि कांग्रेस से सिर्फ एक ओबीसी सांसद जीतकर आए हैं। ओबीसी में कुर्मी समुदाय का दबदबा बढ़ा है।यूपी के 35 ओबीसी सांसदों में 11 कुर्मी समुदाय से जीते हैं, जिनमें तीन बीजेपी से चुने गए हैं तो सात सांसद सपा से जीतकर आए है। एक सांसद अपना दल एस से हैं।बीजेपी से जीते कुर्मी सांसदों में फूलपुर से प्रवीन पटेल, महराजगंज से पंकज चौधरी और बरेली से छत्रपाल सिंह गंगवार हैं जबकि एनडीए की सहयोगी अपना दल से अनुप्रिया पटेल चुनी गई हैं।सपा के टिकट पर जीते कुर्मी सांसदों में अंबेडकरनगर सीट से लालजी वर्मा, श्रावस्ती से राम शिरोमणि वर्मा, प्रतापगढ़ से डा. एसपी सिंह पटेल, खीरी से उत्कर्ष वर्मा 'मधुर', फतेहपुर से नरेश चन्द्र उत्तम पटेल, बस्ती से राम प्रसाद चौधरी और बांदा से कृष्णा देवी पटेल चुनी गई है।यूपी में कुर्मी समुदाय की आबादी 8 फीसदी के करीब है जबकि यादव समुदाय से आबादी 10 फीसदी है। बावजूद इसके कुर्मी समुदाय से सबसे 11 सांसद चुने गए हैं तो यादव समुदाय से पांच है। यादव समुदाय से पांच लोकसभा सांसद चुनकर आए हैं और सभी मुलायम परिवार से हैं। यादव समाज से चुने सांसदों में सपा के प्रमुख अखिलेश यादव कन्नौज से, उनकी पत्नी डिंपल यादव मैनपुरी से, धर्मेंद्र यादव आजमगढ़ से , शिवपाल यादव के बेटे आदित्य यादव बदायूं से और फिरोजाबाद से राम गोपाल यादव के बेटे अक्षय यादव चुने गए हैं।सपा ने इस बार जिन पांच यादवों को टिकट दिया था, वो सभी जीते और बीजेपी ने आजमगढ़ से दिनेश लाल यादव निरहुआ को दिया था, वो हार गए।उत्तर प्रदेश में गैर–यादव और गैर–कुर्मी ओबीसी समुदाय से 2024 में18 लोकसभा सांसद चुने गए हैं, जिनमें एनडीए और इंडिया गठबंधन दोनों से 9–9 सांसद जीते हैं।तेली समुदाय से दो सांसद बने हैं, जिसमें वाराणसी से पीएम नरेंद्र मोदी और सीतापुर से कांग्रेस के टिकट पर जीते राकेश राठौर हैं। जाट समुदाय से चार सांसद चुने गए हैं, जिसमें बीजेपी से दो–मथुरा से हेमामलिनी और फतेहपुर सीकरी से राजकुमार चाहर जीतकर आए हैं।बागपत से आरएलडी के डॉ.राजकुमार सांगवान जीते हैं तो सपा से हरेंद्र मलिक मुजफ्फरगर से सांसद बने हैं।लोध समुदाय से तीन सांसद चुने गए हैं, जिसमें बीजेपी के टिकट पर उन्नाव से साक्षी महराज और फर्रूखाबाद से मुकेश राजपूर जीते हैं तो सपा के टिकट पर हमीरपुर से अजेंद्र सिंह सिंह लोधी चुने गए हैं।मल्लाह–बिंद समुदाय से तीन सांसद चुने गए हैं, जिसमें एक बीजेपी और दो सपा से जीते हैं।बीजेपी के भदोही से विनोद कुमार बिंद, सपा के सुल्तानपुर से राम भुआल निषाद और संतकबीर नगर से लक्ष्मीकांत पप्पू निषाद चुने गए हैं।गुर्जर समुदाय से दो सांसद बने हैं जिसमें बीजेपी के अमरोहा से कंवर सिंह तंवर और आरएलडी के टिकट पर बिजनौर से चंदन चौहान हैं।सपा के टिकट पर कैराना से इकरा हसन जीती है, जो मुस्लिम गुर्जर है। इस तरह तीन गुर्जर सांसद 2024 में बने हैं।मौर्य कुशवाहा शाक्य समुदाय से 3 सांसद चुने गए हैं और सभी सपा से जीते हैं, जिसमें जौनपुर से बाबू सिंह कुशवाहा, एटा से देवेश शाक्य और आंवला से नीरज मौर्य हैं। राजभर समुदाय से सपा के टिकट पर सलेमपुर सीट से रमाशंकर राजभर जीते हैं।2024 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश से 23 सवर्ण जातियों के सांसद चुनकर आए हैं, जिसमें 15 एनडीए के और 8 इंडिया गठबंधन के हैं। सवर्णों में ब्राह्मण समाज से सबसे ज्यादा जीते हैं।बीजेपी से 9 ब्राह्मण सांसद चुने गए हैं, जिसमें पीलीभीत से जितिन प्रसाद, मेरठ से अरुण गोविल, कुशीनगर से विजय कुमार दुबे, कानपुर से रमेश अवस्थी, झांसी सीट से अनुराग शर्मा, गोरखपुर से रवींद्र किशन शुक्ला उर्फ रवि किशन, नोएडा से महेश शर्मा, देवरिया से शशांक मणि त्रिपाठी ब्राह्मण और अलीगढ़ से सतीश कुमार गौतम जीते हैं। सपा के टिकट पर बलिया से सनातन पांडेय जीते हैं तो कांग्रेस के टिकट पर रायबरेली से राहुल गांधी और अमेठी से किशोरी लाल शर्मा जीते हैं।ठाकुर समुदाय से यूपी से सात सांसद चुनकर आए हैं, जिसमें पांच बीजेपी से जीते हैं और दो सपा से लोकसभा सांसद बने हैं। बीजेपी के टिकट पर लखनऊ से राजनाथ, कैसरगंज से करण भूषण सिंह, गोंडा से कीर्तिवर्धन सिंह, डुमरियागंज से जगदंबिका पाल और अकबरपुर से देवेंद्र सिंह उर्फ भोले सिंह जीते हैं तो सपा से धौरहरा से आनंद भदौरिया और चन्दौली से बीरेंद्र सिंह लोकसभा सांसद चुने गए हैं। भूमिहार समुदाय से सपा के राजीव राय घोसी से सांसद बने हैं तो वैश्य समुदाय से दो लोकसभा सांसद जीते हैं, जिसमें बीजेपी के टिकट पर गाजियाबाद से अतुल गर्ग और सपा के टिकट पर मुरादाबाद से रुचि वीरा जीती हैं।उत्तर प्रदेश में 17 लोकसभा सीटें रिजर्व हैं, जिसमें 16 सीटें अनुसूचित जाति यानि दलित के लिए आरक्षित हैं तो एक सीट अनुसूचित जनजाति के लिए रिजर्व है। इस बार रिजर्व सीटों से ज्यादा दलित सांसद बने हैं। सूबे में 17 दलित सांसद चुने गए हैं, जिसमें बीजेपी से सात, सपा के सात, एक कांग्रेस और आजाद समाज पार्टी से एक। दलितों में पासी समुदाय से सबसे ज्यादासांसद जीतकर आए हैं।बीजेपी से 3 और सपा से पांच पासी सांसद बने हैं।बीजेपी के कमलेश पासवान बांसगांव से, हरदोई से जय प्रकाश और मिश्रिख से अशोक कुमार रावत जीते हैं जबकि सपा के टिकट पर मोहनलालगंज से आरके चौधरी, मछलीशहर से प्रिया सरोज, लालगंज से दरोगा प्रसाद सरोज, कौशांबी से पुष्पेंद्र सरोज और फैजाबाद से अवधेश प्रसाद जीते हैं। फैजाबाद सीट अनरिजर्व थी, जहां से सपा ने दलित प्रत्याशी उतारा था।

कविता

अंतस के पट खोलती है,
मन में भाव जगाती है।
नफरत द्वेष में कुछ ना रखा है,
कविता हमें सिखाती है।।

जहां वेदना से तड़पे हम,
संवेदन मन में लाती है।
भटक जाए जब राही राह को,
याद दिलाने आती है।
सहनशक्ति एकता दया को,
जीवित सदा कराती हैं।
नफरत द्वेष में कुछ ना रखा है,
कविता हमें सिखाती है।।

आय भाव और शब्द बन गए,
अंदर से जो जगाती है।
शब्दों से श्रृंगार जो करती,
रसो को भी दर्शाती है।
काव्य की शोभा बढ़ाने आते,
अलंकार बतलाती है।
नफरत द्वेष में कुछ ना रखा है,
कविता हमें सिखाती है।।

ममता जोशी स्नेहा

संक्षिप्त

अखिलेश यादव छोड़ सकते हैं विधायकी !

जायेंगे दिल्ली ,करहल में होगा उपचुनाव

लखनऊ, एजेंसी। लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने बेहतर प्रदर्शन किया है। इस प्रदर्शन से पार्टी हाईकमान उत्साहित है। ऐसे में पार्टी नेता कयास लगा रहे हैं कि सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव करहल विधानसभा सीट छोड़ सकते हैं। कुछ नेताओं ने चुनाव के लिए तैयारी शुरू कर दी है। अभी तक इस संबंध में पार्टी हाईकमान ने अपना रुख स्पष्ट नहीं किया है। सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव करहल विधानसभा सीट से विधायक हैं। हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कन्नौज लोकसभा सीट से जीत हासिल की है। अखिलेश की जीत के साथ ही समाजवादी पार्टी ने लोकसभा चुनाव में बेहतर प्रदर्शन किया है। सपा देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में सामने आई है। परिणामों से सपा हाईकमान भी उत्साहित है। संसद में सपा सांसदों की संख्या अधिक होने के कारण पार्टी नेता कयास लगा रहे हैं कि अखिलेश यादव दिल्ली की राजनीति करें। वह संसद में पार्टी सांसदों का प्रतिनिधित्व करें। इन्हीं कयासों की बल पर पार्टी नेता संभावना जता रहे हैं कि सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे सकते हैं। ऐसा होता है तो करहल विधानसभा सीट पर उपचुनाव होना तय है। अखिलेश यादव करहल विधानसभा सीट से इस्तीफा देते हैं तो यहां सपा की ओर से कई दावेदार हो सकते हैं। सैफई परिवार से अखिलेश यादव, डिंपल यादव, धर्मेंद्र यादव, आदित्य यादव और अक्षय यादव सांसद चुने जा चुके हैं। ऐसे में पूर्व सांसद तेजप्रताप यादव, पूर्व एमएलसी अरविंद यादव, पूर्व विधायक सोवरन सिंह यादव दावेदार हो सकते हैं।

चुनाव के बाद बागियों पर एक्शन के मूड में अखिलेश, पाला बदलने वाले विधायकों के खिलाफ करेंगे कार्रवाई

लखनऊ, एजेंसी। लोकसभा चुनाव के बाद समाजवादी पार्टी ने बागियों पर एक्शन के मूड में दिखाई दे रही है। सपा के खिलाफ बगावत करने वाले विधायकों के खिलाफ पार्टी कार्रवाई की तैयारी कर रही है। सपा पाला बदलने वाले विधायकों की विधानसभा की सदस्यता खत्म कराने की तैयारी में है। ऐसे में विधायकों की सदस्यता खत्म कराने के लिए यूपी विधानसभा अध्यक्ष को पत्र लिखा जाएगा। सपा के बागी विधायकों में मनोज पांडेय, अभय सिंह, पूजा पाल, राकेश पांडेय, राकेश प्रताप सिंह, विनोद चतुर्वेदी और आशुतोष मौर्य शामिल हैं। बता दें कि ये वही विधायक हैं, जिन्होंने राज्यसभा के चुनाव में सपा के साथ धोखा किया था। इन विधायकों ने बीजेपी के पक्ष में क्रॉस वोटिंग की थी। इस चुनाव में बीजेपी ने आठ सीटें अपने नाम कर ली थी तो वहीं सपा के खाते में केवल दो ही सीट आई थी। बीजेपी की जीत में सपा के बागी विधायकों ने अहम भूमिका अदा की थी। राज्यसभा में उत्तर प्रदेश की 31 सीटों में से 10 सीटों पर फरवरी में चुनाव हुए थे। सपा ने लोकसभा आम चुनाव में अब तक के अपने इतिहास में सबसे अच्छा प्रदर्शन किया। उसने कुल 37 सीटें जीतीं। इस तरह सपा देश की तीसरी बड़ी पार्टी के रूप में उभर कर सामने आई है। धार्मिक मुद्दों के बजाय जातीय गोलबंदी और यादवों–मुस्लिमों पर कम दांव की रणनीति से सपा को यह सफलता मिली। वहीं सपा के साथ गठबंधन में आई कांग्रेस ने यूपी में 6 सीटें हासिल की है।

35 हजार के इनामी बदमाश का एनकाउंटर, मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार

लखनऊ, एजेंसी। राजधानी लखनऊ में देर रात हुई मुठभेड़ में शातिर लुटेरे और 35 हजार के इनामी राजीव श्रीवास्तव को गिरफ्तार किया गया है। जबकि उसका साथी अंधेरे का फायदा उठाकर भागने में कामयाब रहा। यह एनकाउंटर लखनऊ के वजीरगंज एरिया में हुआ है। डीसीपी पश्चिम दुर्गेश कुमार ने बताया कि गुरुवार की रात करीब 12.30 बजे कंट्रोल रूम को सूचना मिली कि कुछ अपराधियों ने पुलिस टीम पर फायर किया है। वजीरगंज एचएचओ की टीम पर कई राउंड फायर किया गया, तब पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की। पुलिस की फायरिंग में एक अपराधी को गोली लगी और वह घायल हो गया। दूसरा, वहां से भाग निकला। घायल अपराधी का नाम राजीव श्रीवास्तव है, वह मड़ियांव का रहने वाला है। मूलरुप से वह प्रयागराज जिले का निवासी है। उस पर लखनऊ और प्रयागराज में लूट के मुकदमे दर्ज हैं। 26 मई 2024 को थाना वजीरगंज के पांडेगंज इलाके में लूट की घटना हुई थी। 1 जून को इसका खुलासा हुआ, जिसमें 5 लोगों को गिरफ्तार किया गया। वे गैंग बनाकर डकैती करते हैं। उनका सरगना राजीव श्रीवास्तव है। मुठभेड़ के बाद उसे भी गिरफ्तार कर लिया है। उसके पास से 1 तमंचा, बाइक और बैग बरामद किया गया है। डीसीपी ने कहा कि ये बहुत हार्डन क्रिमिनल है। जो अभी तक जानकारी मिली है, उस पर लूट और डकैती के 9 केस दर्ज हैं। उस पर कुल 35 हजार रुपए का इनाम घोषित था। अभियुक्त ने खुद बताया कि उस पर प्रयागराज में भी डकैती के मामले दर्ज किए गए हैं।

सुबह से उमस धूप और तेज गर्मी, हीट वेव ने परेशानी बढ़ाई

लखनऊ, एजेंसी। राजधानी लखनऊ में शुक्रवार सुबह से ही उमस भरी गर्मी और तेज धूम रही। दिन में 3 बजे तक शहर का तापमान 42 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम विभाग का अनुमान है कि अगले 3 दिनों में तापमान 6 डिग्री तक बढ़ सकता है। सुबह 9 बजे ही लोग गर्मी से परेशान दिखे। 11 बजे तेज धूप और उमस और तेज हो गई। हीट वेव लोगों की परेशानी बढ़ा रही है। इससे पहले गुरुवार को शहर का तापमान 39 डिग्री सेल्सियस रहा, जो 23 मई के बाद सबसे कम था। 23 मई को शहर का पारा 37.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। इसके बाद लगातार 15 दिनों तक टेंपरेटर 40 डिग्री से ऊपर ही बना रहा। 31 मई को 29 साल का रिकॉर्ड टूटा और पारा 45.8 डिग्री तक चढ़ गया था। मौसम विभाग का अनुमान है कि लखनऊ का तापमान फिर से 45 डिग्री तक जाएगा। 7 और 10 जून तक लखनऊ में हीट वेव के भी आसार रहेंगे। अगले 5 दिनों तक तापमान में लगातार बढ़ोतरी की संभावना है। 6 से 9 जून तक शहर का पारा 6 डिग्री बढ़ने की उम्मीद है। मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने कहा, श्अगले 2 दिनों में प्रदेश में हवा का रुख बदलेगा। पुरवाई के बजाए पछुवा हवा चलना शुरू होगी। पुरवाई रुकने की वजह से वातावरण में नमी कम होगी।आसमान में छाए छिटपुट बादल भी छंट जाएंगे। सूर्य की किरणें सीधे जमीन पर आएंगी, जिससे दिन के तापमान में बढ़ोत्तरी होगी। 8 जून से लखनऊ समेत पूरे प्रदेश में लू की स्थिति बनी रहेगी।

संक्षिप्त

नेपाल सरकार ने भारत सहित 11 देशों से अपने राजदूतों को वापस बुलाया

काठमांडू। नेपाल सरकार ने 11 देशों से अपने राजदूतों को वापस बुला लिया है, जिनमें भारत और अमेरिका में सेवारत राजदूत भी शामिल हैं और इनकी नियुक्ति नेपाली कांग्रेस के कोटे के तहत की गई थी। यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब तीन माह

पहले प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल 'प्रचंड' ने पार्टी (नेपाली कांग्रेस) से गठबंधन समाप्त किया और केपी शर्मा ओली से हाथ मिलाया है। उप प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री नारायण काजी श्रेष्ठ की कड़ी आपत्तियों के बावजूद सरकार ने बृहस्पतिवार को यह कदम उठाया। समाचारपत्र 'द काठमांडू पोस्ट' की एक खबर के मुताबिक, नेपाल ने भारत में अपने राजदूत शंकर शर्मा को वापस बुला लिया है। खबर में विदेश मंत्रालय के अनेक अधिकारियों के हवाले से कहा गया कि इस तरह के कदम से बहुत अराजनयिक संदेश जाता है। खबर में एक मंत्री के हवाले से कहा गया कि विदेश मंत्री नेपाली कांग्रेस और अन्य दलों के कोटे से नियुक्त राजदूतों को वापस बुलाने के प्रस्ताव का कथित तौर पर विरोध कर रहे थे लेकिन प्रधानमंत्री दाहाल और सीपीएन–यूएमएल के अध्यक्ष ओली ने राजदूतों को वापस बुलाने का फैसला किया।

अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा चीन, ताइवान की सीमा के पास फिर भेजे सैन्य विमान और जहाज

ताइपे। चीन और ताइवान के बीच लगातार तनाव बढ़ता जा रहा है। बीजिंग अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। एक बार फिर चीनी सेना ने ताइवान की सीमा में घुसपैठ की कोशिश की। हालांकि, ताइवान की सेना ने भी इसका जवाब दिया। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि चीन के छह विमान, छह नौसैनिक जहाज और चार तटरक्षक जहाज ताइवान की सीमा के करीब देखे गए।

एक ड्रोन ने रेखा की पार

ताइवान के राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय (एमएनडी) ने बताया कि गुरुवार सुबह छह बजे से शुक्रवार छह बजे तक ताइवान के आसपास चीनी सैन्य विमान और नौसैनिक जहाजों को देखा गया। एक चीनी ड्रोन को ताइवान के वायु रक्षा पहचान क्षेत्र (एडीआईजेड) के दक्षिण–पश्चिम देखा गया, जबकि एक पीएलए हेलीकॉप्टर दक्षिण–पश्चिम में देश के वायु रक्षा पहचान क्षेत्र (एडीआईजेड) के अंदर घुसने की कोशिश की। इसके जवाब में ताइवान ने चीन की गतिविधि की निगरानी के लिए विमान, नौसैनिक जहाजों और वायु रक्षा मिसाइल प्रणालियों को तैनात किया। बता दें चीन और ताइवान के बीच एडीआईजेड जल संधि एक अनौपचारिक सीमा है।

क्या है ग्रे जोन रणनीति?

अब तक चीन ने सीधे ताइवान पर आक्रमण नहीं किया है, लेकिन वो ये सब कुछ ग्रे जोन में करता है। ये चीन की सेना का एक पैंतरा है, जिससे वो सीधे युद्ध तो नहीं करती लेकिन ये शक्ति प्रदर्शन करती है। ग्रे जोन का मतलब है कि कोई देश सीधा हमला नहीं करता है लेकिन इस तरह का डर हमेशा बनाए रखता है। सीधे सैन्य कार्रवाई की जगह, ऐसी कई चीजें होती रहती हैं, जिनसे हमले का डर बना रहता है। ताइवान के साथ चीन यही कर रहा है। चीन सितंबर 2020 से 'ग्रे जोन' रणनीति का अधिक बार उपयोग कर रहा है। जानकारों का कहना है कि ग्रे जोन युद्ध रणनीति दरअसल, एक तरीका है, जिससे लंबी अवधि में धीरे–धीरे प्रतिद्वंद्वी को कमजोर कर दिया जाता है और चीन ताइवान के साथ ठीक यही करने की कोशिश कर रहा है।

403 चीनी सैन्य विमानों को भेज चुका है चीन

पिछले महीने करीब 403 चीनी सैन्य विमानों और करीब 243 नौसैनिक/तटरक्षक जहाजों ने ताइवान में घुसने की कोशिश की थी। ताइवान पर कभी शासन नहीं करने के बावजूद चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी इसे अपने क्षेत्र का हिस्सा मानती है।

कितनी बार घुसपैठ की कोशिश कर चुकी है चीनी सैना?

महज अप्रैल में ताइवान में 40 बार चीनी सैन्य विमानों और 27 बार नौसैनिक जहाजों का पता लगाया है। रिपोर्ट के अनुसार, सितंबर 2020 से चीन ने ताइवान के आसपास सक्रिय सैन्य विमानों और नौसैनिक जहाजों की संख्या में धीरे–धीरे वृद्धि करके ग्रे जोन रणनीति के अपने उपयोग को बढ़ा दिया है। गौरतलब है चीन, ताइवान को अपना हिस्सा मानता है, जबकि ताइवान खुद को संप्रभु राष्ट्र मानता है। चीन के दबान के कारण सिर्फ 10 से अधिक देशों ने ताइवान को एक अलग देश के रूप में मान्यता दी हुई है।

पाकिस्तानी मंत्री ने सिंध में करतारपुर जैसा गलियारा बनाने का प्रस्ताव रखा

पाकिस्तान के एक प्रांतीय मंत्री ने भारत की सीमा से लगे सिंध प्रांत के इलाकों में करतारपुर जैसा धार्मिक गलियारा खोलने का विचार प्रस्तावित किया है, ताकि हिंदू एवं जैन धर्म के लोग पाकिस्तान स्थित अपने ऐतिहासिक धार्मिक स्थल आ सकें। सिंध के पर्यटन मंत्री जुल्फिकार अली शाह ने बुधवार को सिंध प्रांत में पर्यटन को बढ़ावा देने संबंधी एक कार्यक्रम को दुबई में संबोधित करते हुए यह प्रस्ताव रखा। पाकिस्तान की अधिकतर हिंदू आबादी सिंध प्रांत में रहती है।

शाह ने कहा कि यह गलियारा उमरकोट और नगरपारकर में बनाया जा सकता है। उमरकोट में श्री शिव मंदिर है, जिसे सिंध के सबसे पुराने हिंदू मंदिरों में से एक माना जाता है। कुछ लोगों का मानना है कि इसका निर्माण 2,000 साल से भी पहले हुआ था। नगरपारकर में भी कई परित्यक्त जैन मंदिर हैं। नगरपारकर में बड़ी संख्या में हिंदू रहते हैं। सिंध सरकार के प्रवक्ता ने 'पीटीआई' को पुष्टि की कि पर्यटन मंत्री शाह ने अपने विभाग के अधिकारियों के साथ इस संभावना पर चर्चा की है लेकिन इस मामले में अभी कुछ भी तय नहीं है और यह संघीय सरकार का मामला है। धार्मिक पर्यटकों की सुविधा के लिए शाह ने भारत से सख्खर या लरकाना के लिए साप्ताहिक उड़ान शुरू करने का भी प्रस्ताव रखा।

इजराइली हमले में गाजा के एक स्कूल में कम से कम 33 लोगों की मौत

मध्य गाजा में विस्थापित फलस्तीनियों को आश्रय देने वाले एक स्कूल पर सुबह–सुबह हुए इजराइली हमले में कम से कम 33 लोगों की मौत हो गई, जिनमें 12 महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अस्पताल के अधिकारियों ने बताया कि सुबह–सुबह हुए हमले में अल–सरदी स्कूल को निशाना बनाया गया और स्कूल में फलस्तीनी नागरिक

भरे हुए थे जो उत्तरी गाजा में इजराइली हमलों से बचकर भागे थे। अस्पताल ने शुरू में बताया कि स्कूल पर हमले में मारे गए लोगों में नौ महिलाएं और 14 बच्चे शामिल थे। अस्पताल ने बाद में अपने आंकड़ों में संशोधन करके बताया कि मृतकों में तीन महिलाएं, नौ बच्चे और 21 पुरुष शामिल थे। मध्य गाजा में अलग–अलग हमलों में 15 और लोग मारे गए जिनमें से लगभग सभी पुरुष थे। इजराइली सेना ने बताया कि उसने संयुक्त राष्ट्र द्वारा संचालित एक स्कूल की तीन कक्षाओं पर बृहस्पतिवार सुबह निशाना साधकर हमला किया। उसका मानना है कि इस स्कूल में लगभग 30 फलस्तीनी आतंकवादी मौजूद थे।

उत्तर–पश्चिमी सीरिया में नदी में गिरी स्कूल बस, सात लोगों की मौत, 20 घायल

उत्तर–पश्चिमी सीरिया में बृहस्पतिवार को एक स्कूल बस सड़क से फिसलकर नदी में गिर गई, जिससे कम से कम सात लोगों की मौत हो गई और 20 अन्य घायल हो गए। इनमें अधिकांश बच्चे थे। आपात सेवा ने यह जानकारी दी। स्थानीय नागरिक सुरक्षा संगठन ने एक बयान में बताया कि यह दुर्घटना इदलिब शहर के पश्चिम में स्थित दार्कुश के पास हुई, स्कूल बस ओरोंटेस नदी में गिर गई। बयान में कहा गया कि घटना की सूचना मिलने पर बचाव दल के कर्मियों ने वहां छह घंटे तक तलाश अभियान चलाया।

एस.लाल एण्ड सन्स मेडिकल्स
OPD
नेत्र रोग विशेषज्ञ
डा. आर.के. श्रीवास्तव
समय - 10 बजे से 1 बजे तक,
दिन - सोमवार, मंगलवार, शुक्रवार, (निःशुल्क परामर्श - शनिवार, रविवार)
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
डा. शिखा माथुर
प्रतिदिन - दोपहर 1 से 3 बजे तक
जनरल फिजिशियन
डा. कार्तिकेय
समय - शाम 4 बजे से 8 बजे तक । दिन - प्रतिदिन
पता - 18B, म्योर रोड, जहाज चौराहा, प्रयागराज
Mob.: 9151121918, 9140445768

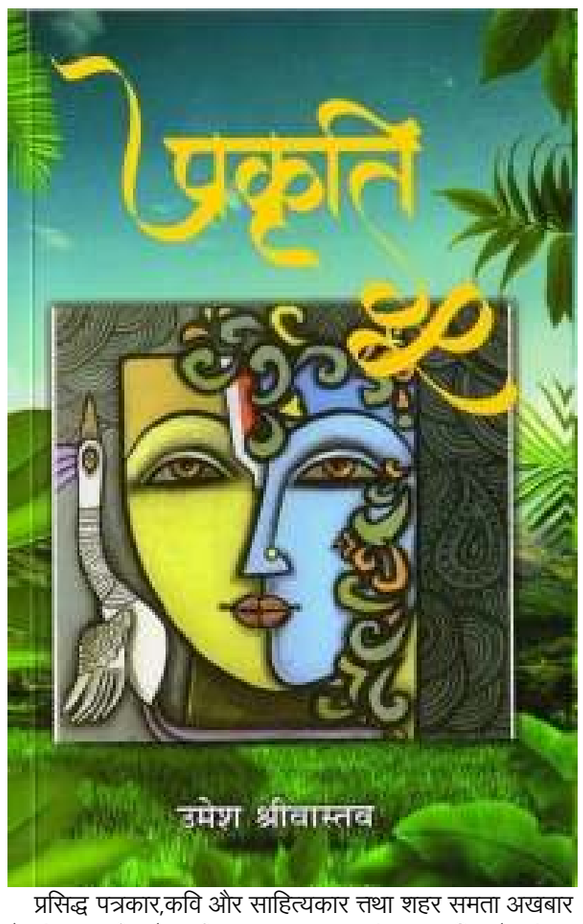

प्रसिद्ध पत्रकार,कवि और साहित्यकार त्तथा शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव का काव्य संग्रह ष्प्रकृतिष् लोकरंजन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है और अमेजन पर उपलब्ध है।

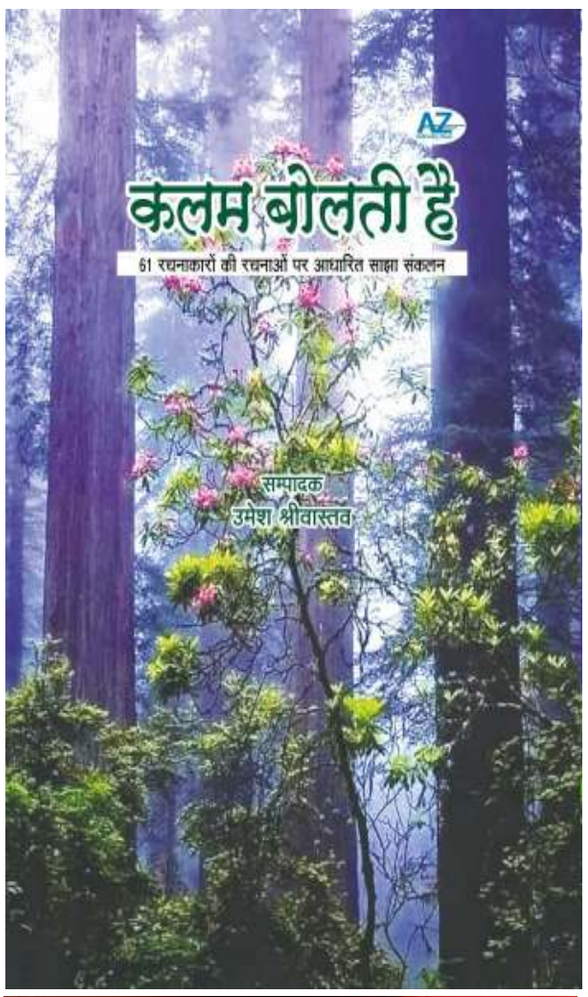

अमेरिका यूक्रेन को 22.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर का नया सैन्य सहायता पैकेज देगा : अधिकारी

अमेरिका यूक्रेन को करीब 22.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर की सैन्य सहायता भेजेगा। अमेरिकी अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि इस नए पैकेज में गोला–बारूद भी शामिल है जिसका इस्तेमाल कीव की सेना रूस के अंदर मौजूद खतरों से निपटने के लिए कर सकती है ताकि खारकीव शहर को भारी रूसी हमले से बचाया जा सके। अधिकारियों ने बताया कि सहायता में हाई मोबिलिटी आर्टिलरी रॉकेट सिस्टम (एचआइएमएआरएस) के लिए गोला–बारूद के साथ ही मोर्टार सिस्टम और तोप के गोलों की एक श्रृंखला शामिल है। उन्होंने नाम न बताने की शर्त पर उस सहायता पर चर्चा की जिसकी अभी तक सार्वजनिक रूप से घोषणा नहीं की गई है। नए अमेरिकी निर्देश के अनुसार, यूक्रेन ऐसे हथियारों का इस्तेमाल उस स्थिति में सीमा पार रूस में हमला करने के लिए कर सकता है जब वहां की सेना उस पर हमला कर रही हो या हमला करने की तैयारी कर रही हो।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।

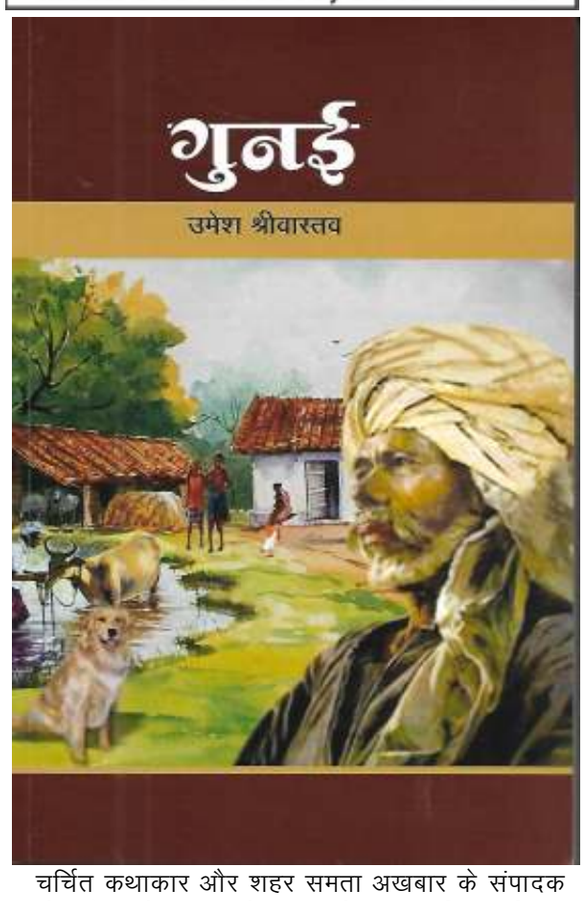

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित उपन्यास गुनई अमेजन पर उपलब्ध हो गया है। पुस्तक

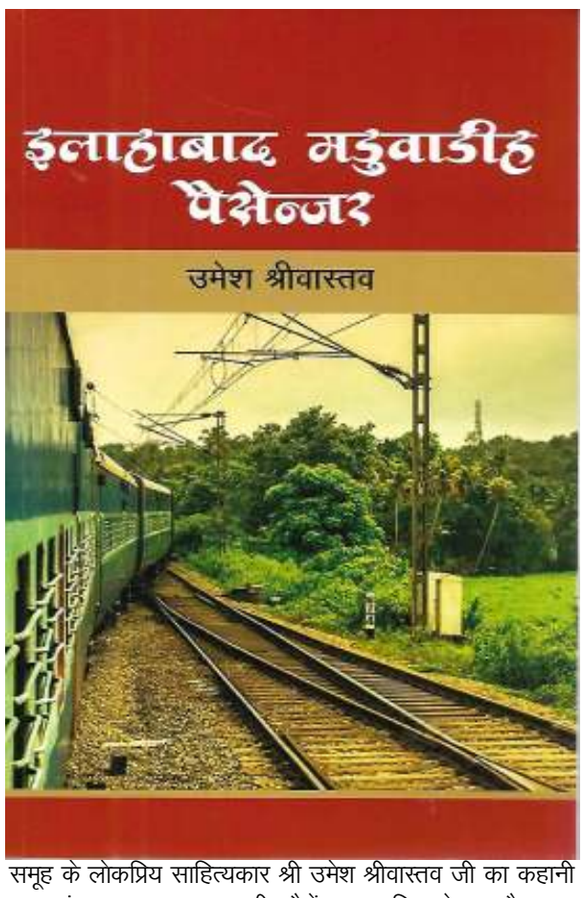

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना। पुस्तक अमेजन पर उपलब्ध है।

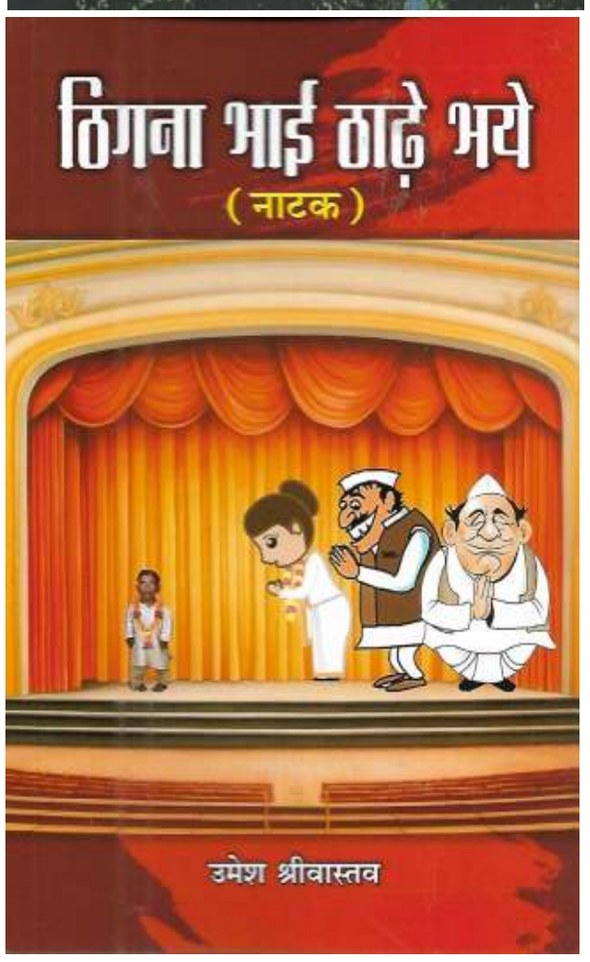

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)